ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 16 अंक-21 फरवरी-I, 2016 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹8.00

धरती पर सम्पूर्णता की जनक बन उभरी-दादी

विगत 60 वर्षों में दादी जानकी जी ने स्व की समझ और आध्यात्मिकता के आधार से सद्भावपूर्ण जीवन जीया है। पिछले 6 दशकों में दादी जी ने लगभग 80 से भी अधिक देशों को अपने आध्यात्मिक प्रज्ञा से जनमानस को प्रेरणा दी है। अपने मन मस्तिष्क को आध्यात्मिक प्रयोगशाला बना,उसका प्रयोग इस जगत के मानवों को जीवन की सही राह दिखाने वाली एक दूरांदेशी, लाइट हाउस दादी जानकी को उनके इस धरा पर इस अमूल्य देह के सौ वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में कोटि-कोटि बधाइयाँ।

दादी जानकी एक सम्पूर्ण अभ्यासी महिला हैं जिनका जीवन उनके कर्म से बोलता है, जिन्होंने 20वीं शताब्दी में एक महान परिवर्तन की नींव रखी। आप शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य की एक मिसाल हैं। आपका हर कार्य प्रायः समझ पर आधारित होता है। यदि हम इसे कहें कि आपकी सोच एक सुरक्षित स्वास्थ्यकारी मानवता का भविष्य निर्धारित करती है तो कोई अति-श्योक्ति नहीं होगी। आप 1916 में एक सिंधी, धनाढ्य व जनकल्याणकारी परिवार जो वर्तमान समय पाकिस्तान (सिंध) का हिस्सा है में पैदा हुईं, जो आज हज़ारों हज़ार के विवेक को जागृत करने की प्रेरणाश्रोत बनीं। आपको देखकर आज सभी अपना जीवन खुशी से भरपूर और स्वास्थ्यकर बनाने की प्रेरणा लेते हैं। आपके बारे में एक बात और हम कहना चाहेंगे कि आप ही हैं जिन्होंने वैश्विक स्तर पर भावना और उससे उभरने वाली बीमारियों की गहराई में जाकर सबको अवगत कराया। आज बीमारी सिर्फ शारीरिक ही नहीं है, बल्कि उसका एक स्तर मानसिक भी है। इनका दृष्टिकोण ना सिर्फ स्वास्थ्य को गति देना है बल्कि व्यैक्तिक स्तर पर पूरे विश्व की आत्माओं को हीलिंग देना है।

सेवा की विहंगम दृष्टि

दादी की जीवनी की झलक अगर हम देखें तो उन दिनों दादी को जो पहली सेवा मिली जो बीमारों की सेवा थी, जो उनके जीवन को तीव्रता प्रदान करने वाला क्षण था। उनकी प्राथमिक शिक्षाओं में प्रमुख रूप से भारतीय ग्रन्थ थे जिसको उन्होंने बड़े दिल से समझा और आत्मसात किया। 12 साल की उम्र से आपने इस श्रृंखला को पूरी तरह से विकसित किया कि कैसे अपने आपको आध्यात्मिक चेतना के आधार से जीवित रखना है। आंतरिक खुशी से कैसे शारीरिक दर्द से बाहर आया जाता है, इसे आपसे अच्छी तरह से सीखा जा सकता है। दादी के पास जब भी कोई ऐसा परिवार मिलने आता, उनमें से चाहे कोई उनका रिश्तेदार ही क्यों न हो, उन सभी को उनसे परमात्मा की झलक और बहुत हल्केपन की फीलिंग आती है। प्यार और सहानुभूति की जैसे वे प्रतिमूर्ति हैं।

दादी ने जो सीखा वो परमात्मा से

दादी जानकी संस्था के संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के बारे में कहतीं कि मैंने ब्रह्माबाबा से शक्तिशाली, व्यवहारिक, आध्यात्मिक जागृति का पाठ पढ़ा। उन्होंने सिखाया कि कैसे परमात्मा से जुड़कर दूसरों को भरपूर किया जा सकता है। निःस्वार्थ और दिल से सेवा करना लोगों को शक्तिशाली बनाने के लिए अति आवश्यक है। सम्पूर्ण स्नेह से लोग हमारे विचार, हमारे शब्द और हमारे कर्म को समझ पाते हैं। दादी का कहना है कि उन्होंने ब्रह्माबाबा से दूरांदेशी (फॉर साइटेडनेस) बनकर धर्म, पंथ, समाज से ऊपर उठकर खुशी और हर तरह के स्वास्थ्य को लोगों को देना सीखा।

दादी खुद प्रयोगशाला

दादी का अपना जीवन खुद ही प्रयोगशाला है, जिसको उन्होंने अपने मन-मस्तिष्क में बना रखा है और अपने आध्यात्मिक तकनीक से वे अपनी बीमारियों पर विजय प्राप्त कर लेती हैं। उनका कहना है कि परमात्मा की पहचान और समझ के आधार से सकारात्मक कर्म होते हैं और व्यक्ति अच्छे जीवन की तरफ बढ़ता है और समाज को सुदृढ़ बनाने में सकारात्मक योगदान भी देता है।

6 दशक की उपलब्धि

विगत 60 वर्षों में दादी जानकी जी ने स्व की समझ और आध्यात्मिकता के आधार से सद्भावपूर्ण जीवन जीया है। पिछले 6 दशकों में दादी जी ने लगभग 80 से भी अधिक देशों को

अपने आध्यात्मिक प्रज्ञा से जनमानस को प्रेरणा दी है। आध्यात्मिक और धार्मिक नेताओं से भरा हुआ, सन 1996 में यूनाइटेड नेशन कॉन्फ्रेन्स जो इस्ताम्बुल में हुई थी, जिसमें विश्व भर के प्रख्यात आध्यात्मिक और धार्मिक नेतायें आये थे, उसमें दादी जी ने प्रथम में सम्बोधन भाषण दिया था। इसी श्रृंखला में सेन फ्रान्सिसको में 1996 में स्टेट ऑफ वर्ल्ड कॉन्फ्रेन्स में भी दादी जी ने हिस्सा लिया था, इस कॉन्फ्रेन्स में वहां के तत्कालिन राष्ट्रपति तथा लगभग 600 से भी अधिक कार्यकर्ता उपस्थित थे।

मुलाकात के दौरान दादी जानकी के साथ प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी।

श्री श्री रविशंकर जी के साथ स्नेह मिलन करते हुए दादी जानकी।

अरब देश के सम्मानित प्रतिनिधियों के मध्य दादी जानकी।

एक ऐसी युक्ति जिससे होगा कल्याण

कलियुग के अंतिम चरण में, अज्ञान रूपी रात्रि में, जब परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होते हैं तब वे मनुष्यमात्र को यह शिक्षा देते हैं कि - ``काम-वासना का भोग एक जीव-घातक विष लेने के सामन है जिससे कि मनुष्य का जन्म-जन्मान्तर का सर्वनाश होता है। अतः ज्ञान रूपी सोम अथवा अमृत निराकार परमात्मा शिव, जिन्हें ही `सोमनाथ' और `अमरनाथ' भी कहा जाता, इस संसार सागर से सारा विष हर लेते हैं। इसी कारण उन्हें `विष-हर' भी कहा गया है।

परमात्मा शिव के उसी कर्त्तव्य की स्मृति में आज भी लोग जब शिवरात्रि का उत्सव मनाते हैं तब ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हैं। वैसे भी जो शैव लोग प्रसिद्ध पाशुपत व्रत रखते हैं तो वे नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं। जो मनुष्य 12 वर्ष तक निरंतर नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करता है, उसे पाशुपत व्रत का बहुत फल मिलता है- ऐसी शैव लोगों की मान्यता है। पाशुपत व्रत रखने वाले शैव लोग ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने के अतिरिक्त, शिव की याद में रहने का अभ्यास करते हैं तथा जो वस्तुएँ उन्हें सर्वाधिक प्रिय हैं उन्हें शिव को अर्पित करते हैं और शिव की सेवा में रहने का पुरुषार्थ करते हैं- उपरोक्त बातें मुख्य रूप से उनके व्रत में शामिल हैं।

- ब्र. कु. गंगाधर

वर्तमान समय शिवरात्रि का समय है

अब विष को छोड़कर शिव से प्रीति जोड़ो!

ऊपर हमने `रात्रि' का जो अर्थ बताया है, उससे स्पष्ट है कि अब कलियुग का जो अन्तिम चरण चल रहा है, यह सारा काल `रात्रि' अथवा `महारात्रि' ही है। हम सभी नर-नारियों को यह शुभ-संदेश देना चाहते हैं कि अब परमपिता परमात्मा शिव संसार को पावन तथा सुखी बनाने के लिए फिर से प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर ज्ञानामृत पिला रहे हैं और वास्तविक सहज राजयोग भी सिखा रहे हैं। चूंकि कलियुगी सृष्टि के विनाश में बाकी थोड़ा समय है, इसलिए अब हम सबका कर्त्तव्य है कि उनकी आज्ञानुसार हम नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करें और शिव के अर्पण होकर संसार की ज्ञान-सेवा करें। वास्तव में यही सच्चा पाशुपत व्रत है जिसका फल मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति माना गया है। अब मनुष्य को चाहिये कि विकारों रूपी विष से नाता तोड़कर परमपिता परमात्मा शिव से वह अपना नाता जोड़े। वास्तव में शिवरात्रि केवल एक दिन नहीं होती बल्कि जब तक शिव परमात्मा इस अज्ञान-रात्रि में अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं, यह सारा समय ही शिवरात्रि है जिसमें कि मनुष्यात्मा को ज्ञान द्वारा ही जागरण मनाना चाहिए, शिव परमात्मा की स्मृति में स्थित होना चाहिए तथा ब्रह्मचर्य व्रत का सहर्ष पालन करना चाहिए। शिवरात्रि का त्योहार मनाने की यही सच्ची रीति है।

शिवरात्रि ही हीरे-तुल्य जयन्ती है

चूंकि शिव ही ज्ञान के सागर, शान्ति के सागर, आनंद के सागर, प्रेम के सागर, परमपिता परमात्मा हैं, जोकि कलियुग के अंत में पशु-तुल्य आत्माओं को माया के पाशों से छुड़ाकर मुक्त करते हैं तथा ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा मनुष्य को देवता बनाते तथा सतयुगी पावन सृष्टि की पुनः स्थापना करते हैं, इसलिए `शिव जयंती' ही सर्वोत्तम त्योहार है। यह सभी आत्माओं के परमपिता का जन्मोत्सव है जिसे सभी देशों में धूमधाम से मनाया जाना चाहिये। चूंकि शिव ही कलियुग के अंत और सतयुग के आदि के संगम समय सभी मनुष्यों का जीवन कौड़ी-तुल्य से बदल कर हीरे-तुल्य बनाते हैं, इसलिए शिवरात्रि ही हीरे-तुल्य जयन्ती है, परन्तु आज स्वयं भारतवासी भी शिवरात्रि के इस महात्म्य को नहीं जानते तो और देशों के लोग भला कैसे जानेंगे...!

हमारी नवीनता से लोगों को मिलेगी नूतनता

विचार सागर मंथन करना मुझे तो बहुत अच्छा लगता है, इससे बहुत फायदा है, सबसे बड़ा फायदा कि कोई और विचारों में लटकेंगे, अटकेंगे नहीं। सागर को मंथन करने से मोती मिलते हैं। ऊपर-ऊपर से करेंगे तो सिर्फ कौड़ियाँ ही मिलती हैं, वह भी सच्ची होती हैं। पैसा झूठा हो सकता है, नोट दूसरा हो सकता है लेकिन कौड़ी झूठी नहीं हो सकती। शंख जो होता है वह सागर की रचना है इसलिए उसका आवाज़ कितना दूर-दूर तक गूंजता है। विचार सागर मंथन से लगेगा यह सागर की रचना है। कोई और बात का विचार न अपने लिये आता है, न किसी और के लिए आता है। शान्त रहने से कुछ अच्छा माल मिलता है, वायब्रेशन मिल जाते हैं। सोचने में नहीं मिलता है इसलिए मैं अपने को इन सबसे फ्री रखती हूँ। मेरी दिल होती है आप भी ऐसे बार-बार मीटिंग नहीं करो, क्या ज़रूरत है! फ्री रहो। हाँ, फैमिली फीलिंग की मीटिंग ज़रूरी है क्योंकि परिवार है।

विचार सागर मंथन करके प्रैक्टिकल जीवन के परिवर्तन से नवीनता का अनुभव करो। मेरे में नवीनता आयेगी तो औरों को प्रेरणा मिलेगी। यह गुप्त बात है, अगर हम अभी करेंगे ना, भले पहले इतना पुरुषार्थ नहीं किया है, बाबा रहमदिल है, फ्राकदिल है उसका फायदा लो। विचार सागर मंथन जल्दी-जल्दी में नहीं होता है, विचार सागर मंथन करने से राइट टाइम पर राइट टचिंग आयेगी, यह भी भाग्य है। इससे स्व सेवा और सर्व की सेवा होगी। अगर ज़रा भी मैं दुःख महसूस करने वाली आत्मा हूँ, तो मैं दूसरे का दुःख दूर नहीं कर सकती हूँ। लाइट रहने से औरों को लाइट अनुभव होगी, हल्कापन लगेगा। 5 हो या 50 हो या 500 हो, पर बाबा की लाइट लाखों करोड़ों को मिल रही है।

कोई बीमारी है तो आश्चर्य नहीं खाना है, यह क्यों? यह हिसाब-किताब सतयुग में नहीं होगा, दवाई है इसलिए क्यों न कहो। आयी है पास हो जायेगी, अगर बीमारी को सोचते हैं तो बैठ जाती है, जाती नहीं है। कई हैं जो डॉक्टर और दवाइयाँ बदलते रहते हैं, बहुत खर्चा करने के बाद भी कुछ नहीं होता है, पर कोई हैं जो बीमारी को खुद ही भगा लेते हैं। बाबा को सर्जन के रूप में देखो, वो जाने उसका काम जाने, वह इंजेक्शन लगा करके अशरीरी बना देता है।

बाबा कहता है कोई बोझ हो, कोई संकल्प हो तो तुम सिर्फ मुझे दे दो, ताकि तुम साफ रहो। साफ रहेंगे तो सेफ रहेंगे। माया छुयेगी भी नहीं, पर कर्मभोग, थोड़ा ब्लड प्रेशर हाई हुआ,...परेशान हो जायेंगे। अरे, परेशान क्यों होते हो? प्रेशर परेशान होने से होता है। शान में रहने से नहीं होता है, यह नवीनता लाओ ना, क्या बड़ी बात है। तो ऐसे एक दो से सीखने की भावना हो, तो कभी भी हमको तकलीफ नहीं होगी। न मेरे से किसी को तकलीफ हो, न मेरे को तकलीफ हो। किसी को शान्ति प्रेम भले मिले, जितना मिले पर थोड़ा भी कोई मेरा एक शब्द या मेरा रहन-सहन किसी को तकलीफ न दे। यह पुण्य के खाते में जमा होगा। कर्मों का हिसाब-किताब चुक्तू हो जायेगा।

तो बाबा यह विधि सिखाता है, महिमा करके योग्य बनाना। बाबा के काम का योग्य बनाना, मैं इस काम के लिए हूँ क्या? अरे, क्या भाषा बोली? सम्भल के बोलो क्योंकि स-

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

`गमयुग पर एक-एक बोल अमूल्य है। ऐसे बाबा का एक-एक बोल अनमोल है, ऐसे हमारी भी बहुत वैल्यू है। जो पुरुषार्थ करना है, अब करना है, मुझे करना है, समय करा रहा है, बाबा करा रहा है। कोई बड़ी बात नहीं है। गुप्त पास विथ ऑनर में आना है। क्या समझा है? कोई समझे ना समझे ल-`किन बाबा तो समझता है ना। अगर हम खज़ानों को सम्भाल के नहीं रखते हैं तो उसे प्राप्ति की कदर नहीं होती है। जहाँ किचड़ा होता है वहाँ कीड़े पैदा हो जाते हैं। ऐसे ही थोड़ा भी हमारे अंदर किचड़ा होगा तो औरों को बीमारी पैदा करेगा इसलिए स्थूल, सूक्ष्म अंदर बाहर से सफाई रखो क्योंकि मैं कोई डस्टबीन नहीं हूँ। कोई भी किचड़ा है मन या तन का, तो वो इधर-उधर नहीं फेंको क्योंकि यह भी ईश्वरीय कायदे हैं ना। ईश्वरीय कायदे प्रमाण चलो तो सब ठीक है। आजकल दुनिया में लव का दिवाला है, न लव देना जानते हैं न लव लेना जानते हैं वह कायदेसिर क्या चलेंगे? लवफुल ही लॉफुल होते हैं। मैं शरीर छोडूँ तो क्या याद करेंगे, थी तो अच्छी परंतु...यह नहीं चाहिए, वो यादगार नहीं है। तो दातापन के संस्कार इमर्ज करके ब्राह्मणों को स्नेह और सम्मान से प्यार दो और अपने से आगे रखो।

बाबा का संकल्प, हमारा हो कायाकल्प

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

अभी सभी बाबा की याद में बाबा की बातें सुनने के लिए इकट्ठे हुए है। अभी सबके सूरत में बापदादा की याद दिखाई दे रही है और हरेक को कितनी खुशी है क्योंकि बाबा कहता है कि खुशी जैसी खुराक और है ही नहीं। अगर खुराक खाना है तो खुशी, तो आप सब तो सदा खुश रहते ही हैं। तो आप खुराक खाते ही हैं, आज देखो बाबा की मुरली का ही वर्णन कर रहे हैं। बाबा ने कितनी अच्छी समझानी दी है, बाबा कहते हैं कि आप बच्चे जब यहाँ हॉल में बैठते हो तो उस समय आपकी बुद्धि में क्या आता है? अभी बाबा आया कि आया, बाबा के महावाक्य सुनने के लिए आये हैं। तो सबकी बुद्धि में बाबा के शब्द स्मृति में आते ही रहते हैं और इस स्मृति में रहने से कितना सुख और शांति का अनुभव होता है। सिर्फ सोचने से ही कितना अंतर पड़ जाता है तो आप सोचो, सोचने के बजाए जब हम वो रूप बन जाते हैं तो कितनी खुशी की बात! और सदा यही कोशिश करनी है कि जिस समय भी हम बाबा की बातें सुनाते हैं तो उस समय ऐसे लगे जैसे बाबा हमारे में सम्मुख हाज़िर नाज़िर होके अपनी याद दिला रहा है। और बाबा ऐसा मुस्कराता है जैसे सामने से ही देख रहा है और हमारे भाग्य को उदय कर रहा है।

बाबा कहता है बस, चलते-फिरते कुछ भी करते मुझे याद करो। और याद कितनी मीठी है बाबा कहने से ही मुख मीठा हो जाता है। तो आज भी हम सभी मिलके बाबा की याद में बैठे हैं और बैठ करके जो बाबा का संकल्प है कि इस दुनिया में यह पता पड़े कि हमारा बाबा कौन? और बाबा क्यों आया है, वो हम कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं वो भी बाबा रोज़ देखता है। तो आप सभी भी आज बाबा के आगे बैठे हैं, यह तो भाग्य है जो जब बाबा चांस देता है अपने सामने बैठके सुनने का और हम लोगों को भी कितना अच्छा लगता है, जब बाबा के सामने बैठते हैं और बाबा बोलते हैं तो ऐसे लगता है जैसे एक-एक शब्द बाबा का मेरे लिये स्पेशल है और मुझे ऐसा बनना है, दूसरे तरफ बुद्धि नहीं जाती है। अपने तरफ ही जाती है तो कितना मीठा अनुभव होता है। अभी आज भी उसी अनुभव को हम रिपीट कर रहे हैं और दिल में वाह बाबा, वाह बाबा वाह! की समृति कितनी प्यारी है, आपके भी अंदर बाबा आ गया ना। आप भी यही समझते हैं कि बाबा हमारे द्वारा बोल रहा है, तो अभी चलो बाबा के महावाक्य सुनें और सब कुमार या अधरकुमार भाई सब उमंग-उत्साह से बाबा का एक-एक बोल सुन रहे हैं लेकिन धारण करके उस पर चलने का दृढ़ संकल्प भी कर रहे हैं।

तो आप सभी भी किसकी याद में बैठे हो? मीठे बाबा, प्यारे बाबा की। ऐसे मीठे बाबा को याद करने से अंदर का कड़वापन आपेही निकल जायेगा। बाबा की हरेक बच्चे प्रति यही शुभ आश है कि यह मेरा एक-एक बच्चा बाप समान बनके निर्विघ्न रहे, रहते भी हैं और रहेंगे भी लेकिन एक-एक बच्चा विश्व कल्याण के कार्य में सदा मग्न है भी और सदा मग्न रहेंगे। तो बाबा आप सबकी शक्लें देख करके प्यार कर रहा है, वाह बच्चे वाह! कितना प्यार से सुनते हैं और प्यार से सुनते प्यार को दिल में समाते भी हैं और दिल में समाने से कभी भी देखो तो बाबा का प्यार ही दिखाई देता है, ऐसे है ना।

आजकल की मुरली का सार क्या है? बाबा कहते हैं कि बस, कुछ भी करो मुझे याद ज़रूर करो क्योंकि पाप कटने के लिए तो बाबा की याद ही चाहिए ना। तो हमारे कितने जन्मों के पाप इकट्ठे हैं और फिर अभी बाबा के याद में सब खत्म हो रहे हैं।

महाशिवरात्रि 'महापर्व' की

सृजनकर्त्ता शिव के कलियुग की महारात्रि के समय अवतरण की याद में मनाई जाती है - महाशिवरात्रि। यों तो प्रत्येक पर्व का अपना-अपना महत्व है तथापि शिवरात्रि तो सभी पर्वों की भी मानो जननी है। शिव भारत में आते हैं। उनका जन्म नहीं होता, क्योंकि वे जन्म मरण से न्यारे हैं। वे परकाया प्रवेश करते हैं, वे ही सर्व आत्माओं में परम हैं इसलिए परम आत्मा हैं। उनका ही दिव्य कर्त्तव्य है नव सृष्टि की रचना करना, दुःखधाम का अन्त करना तथा सभी आत्माओं को पतित से पावन बनाना।

फरीदाबाद-हरियाणा। विधायक नगेन्द्र भड़ाना को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट कर मीडिया की गतिविधियों से अवगत कराते हुए ब्र.कु. कौशल्या व अन्य।

कब आते हैं शिव

`शिव' उनका दिव्य नाम है। ये नाम उनके शरीर का नहीं है, वे तो सदा ही निराकार हैं।

आगरा (सेक्टर 7) : ग्राम विकास अभियान के अन्तर्गत आयोजित रैली का शुभारम्भ करते हुए शिम्बुजिया कॉलेज के डायरेक्टर जी.एस. राणा, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. गीता व अन्य।

डिहरी-बिहार। 'अखिल भारतीय किसान सशक्तिकरण अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए प्रखण्ड प्रमुख मीत सिंह, प्रखण्ड कृषि पदाधिकारी, महिला समाजसेवी सुनीता सिंह, ब्र.कु. शोभा व अन्य।

उनका अवतरण होता है तब, जब माया रावण यहां सभी का अकल्याण कर देता है। वे सबका कल्याण करते हैं इसलिए उनका नाम `शिव' गाया जाने लगता है।

शिव, रात्रि में आते हैं, परन्तु उस रात्रि में नहीं जो रोज़ होती है। ये महारात्रि तब कहलाती है जब सम्पूर्ण धरा पर अज्ञान का अंधकार छा जाता है, चहुँ ओर पांच विकार हाहाकार मचा देते हैं, मनुष्य दुःखी, अशांत व परेशान होकर उसे पुकारने लगते हैं कि हे ज्ञान सूर्य आओ, इस अंधकार को हरो, हमें सत्य ज्ञान का प्रकाश दो। और वह समय होता है कलिकाल का अंत। तब वे प्रजापिता ब्रह्मा के तन में आकर सभी को सत्य ज्ञान देते हैं व राजयोग सिखाते हैं, इससे सभी विकार मुक्त होकर सुखी हो जाते हैं। उसी की यादगार में यह महापर्व मनाया जाता है।

सीकर-राज.। विश्व शांति मेला का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए बायें से ब्र.कु. स्वाति, ब्र.कु. पुष्पा, पवन मोदी, सुभाष महरिया,पूर्व केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री, ब्र.कु. पूनम, गोवर्धन वर्मा,विधायक, महेश जी व ब्र.कु. अरुण।

अब शिव स्वयं जगाने आये हैं

प्यारे भक्तों, अब तक आप हर वर्ष शिवरात्रि के समय पूरी रात जागकर शिव का आह्वान करते हो व उसके दर्शनों की अभिलाषा रखते हो। अब आपका इन्तज़ार [illegible] जागना है। आप सोचेंगे कि ये कैसे होगा? जैसे हम सदा के लिए जाग गये हैं, वैसे ही आपको भी जागना होगा। ये जागना है - अज्ञान की नींद से। मालूम है किसने सुलाया है आपको इस कुम्भकरण की नींद में? रावण ने। ये रावण लंका अधिपति नहीं, अब [illegible] का नाम। काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार। इन्होंने ही चहुं ओर अंधकार व्याप्त कर सबको सुला दिया है। अब जागो। जगाने के लिए ज्ञान के सागर परमपिता शिव सत्य ज्ञान दे रहे हैं जिससे हमें अपने सत्य स्वरूप की स्मृति आ जाती है और हम सदा के लिए अज्ञान अंधकार से बाहर आ जाते हैं। अब वे न केवल दर्शन दे रहे हैं, बल्कि सदा मिलन मना रहे हैं, जन्म-जन्म की मिलने की प्यास बुझा रहे हैं। आ जाओ, अपने प्राणेश्वर प्यार के सागर से मिलकर अपनी जन्म-जन्म की प्यास बुझा लो। भक्ति का फल पा लो।

शिव ज़हर पीने पुनः आ गये हैं

पुराणों की कथा तो लोक प्रसिद्ध है कि देव व असुरों ने सागर मंथन किया। जब ज़हर निकला तो सबने शिव का स्मरण किया कि वे ही ज़हर पान कर सकते हैं। वो ज़हर और कुछ नहीं, पांच विकारों का ज़हर ही है। ये विकार बड़े विष हैं जो जीवन को ज़हरीला बना देते हैं, सम्बन्धों को ज़हरीला बना देते हैं और जिन्होंने समस्त विश्व को ज़हरीला बना दिया है। राष्ट्रों के मध्य भी ज़हर व्याप्त है तो प्रकृति भी ज़हर उगल रही है। अब पुनः सभी ने शिव का स्मरण किया और वे आ गये हैं, सबका ज़हर पीने व बदले में अमृत पिलाने। तो दे दो उन्हें ये अपने पांच विकार [illegible] जिन्होंने तुम्हारा सबकुछ नष्ट कर दिया है। सारे नहीं तो अपना क्रोध या अहंकार ही दे दो। शिवरात्रि के दिवस पर सच्चे मन से किसी एक बुराई को शिव को दान कर दो तो आपकी भक्ति भी सफल हो जायेगी व जीवन भी।

बख्तियारपुर-बिहार। बख्तियारपुर चर्च के सेक्रेट्री फादर बर्थलोम्यू व विमला विद्यालय की प्रिन्सीपल मोनिका बहन के साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. मृदुल।

सदा के लिए व्रत ले लो

भक्ति में बड़ा महत्व है व्रत का। लोग लम्बी-लम्बी पैदल यात्रा करके शिव पर पवित्र नदियों का जल भी चढ़ाते हैं और कहीं-कहीं [illegible] करते ही [illegible] आजीवन व्रत लेने का, मन को शुद्ध करने का। यदि भक्ति करते व [illegible] शास्त्र पढ़ते या कठिन [illegible] शुद्ध न हुआ, आचरण निर्मल न हुआ व कर्म श्रेष्ठ न हुए तो जान लें कि ऐसी भक्ति निष्फल ही जाती है।

जब हम पैदल चलें तो हमारे प्रत्येक कदम में पुण्य समाया हो, हमारे कर्म सुखदाई हों तो शिव पर जल चढ़ाना सार्थक होगा। शिव तो हम पर अमृत चढ़ाते हैं, हम उन पर पुण्य कर्मों का जल चढ़ाकर उसका रिटर्न करें। तो आओ हम पुण्य कर्म करने का व्रत लें

सोजत सिटी-राज.। 'स्वच्छ भारत अभियान' के अंतर्गत निकाली गई रैली में उपस्थित हैं म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के चेयरमैन मांगीलाल [illegible], ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. आरती व अन्य।

तोशाम-हरियाणा। शांति यात्रा को हरी झण्डी दिखाकर रवाना करते हुए आयकर आयुक्त राजेश नारुलिया, सरपंच देवराज गोयल, ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. निर्मला व अन्य।

रूपवास-राज.। राजकीय माध्यमिक विद्यालय एक्टा के विद्यार्थियों को 'जीवन मूल्यों' पर सम्बोधित करने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. कनक, ब्र.कु. गीता तथा शिक्षकगण।

भोपाल-म.प्र.। मध्य प्रदेश के राज्यपाल राम नरेश यादव को नये वर्ष की बधाई देने के पश्चात् ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराते हुए ब्र.कु. अवधेश। साथ

मस्कट। इंद्रामणि पाण्डेय,एम्बेसेडर ऑफ इंडिया टू द सल्तनत ऑफ ओमन के साथ मुलाकात व आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् चित्र में इंद्रामणि पाण्डेय, ब्र.कु. सूर्य, ब्र.कु. रुपेश, ब्र.कु. रामू व ब्र.कु. गायत्री।

दिल्ली-महिपालपुर। मुख्यमंत्री माननीय अरविन्द केजरीवाल व विधायक देवेन्द्र सहरावत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनूसुइया। साथ हैं भगवान भाई।

नाहन-हि.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय मेला श्री रेणुका जी में माननीय मुख्यमंत्री वीरभद्र

बिलाड़ा-राज.। विधि एवं कानून राज्यमंत्री अर्जुन लालजी को ईश्वरीय

मुम्बई-सांताक्रूज़। लखनऊ में राहुल गांधी के साथ ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. मीरा।

जेवर-पलवल। नवनिर्मित सेवाकेन्द्र 'प्रभु आँचल' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शुक्ला दीदी। साथ हैं आई.ए.एस. रीता राम मीना,लेबर कमिश्नर,गाज़ियाबाद, ओमप्रकाश वर्मा,चेयरमैन,नगरपालिका, ब्र.कु. अनूसुइया, ब्र.कु. सुषमा व ब्र.कु. सुदेश।

कपूरथला-पंजाब। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राजपाल तीन रत्न मिशन के सम्पादक समाजसेवी श्याम सुंदर अग्रवाल, ब्र.कु. लीना, ब्र.कु. मोनिका, ब्र.कु लक्ष्मी व अन्य।

पुणे-पिंपरी। साधू वासवानी मिशन की ओर से मीटलेस डे के उपलक्ष्य में आयोजित महारैली में ब्रह्माकुमारीज़ के सतयुगी स्वर्णिम आहार एवं आने वाली दुनिया रामराज्य की झाँकी और कॉमेन्ट्री द्वारा संदेश दिये जाने के पश्चात् मिशन के प्रमुख दादा वासवानी जी के साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. सुरेखा।

अहमदाबाद-नवरंगपुरा। लुधियाना से ब्र.कु. राज दीदी की ओर से नये वर्ष के उपलक्ष्य में दिव्य नगरी स्लम के बच्चों के लिए स्वेस्टर्स की सौगात स्लम के बच्चों को वितरित करते हुए डी.सी.पी. विपिन आहिर। साथ हैं ब्र.कु. ईशिता।

दिल्ली-हस्तसाल। 'एक शाम प्रभु के नाम' विषयक कार्यकम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. सतीश,माउण्ट आबू, ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. निशा व सुनीता।

आगरा-शास्त्रीपुरम। सेवाकेन्द्र के द्वितीय वार्षिकोत्सव में केक काटते हुए ब्र.कु. ज्योत्सना,कोसी कलाँ, पूर्व कमिश्नर सीता राम मीणा, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. शालू व परमानंद भाई,सेल टैक्स ऑफिसर।

परिस्थिति में स्थिति बनाना स्वयं की ज़िम्मेवारी

प्रश्नः– रिश्तों में खिंचाव, चलो ठीक है इतना तो होता ही है।

उत्तरः– `रिश्तों में खिंचाव होना स्वाभाविक है', `एक-दूसरे के साथ झगड़ा करना ये सब होना ये तो स्वाभाविक है' स्वाभाविक...स्वाभाविक...कहते-कहते हमने इतनी सारी अस्वाभाविक चीज़ों को स्वाभाविक बना दिया। क्यों, क्योंकि जो सबसे महत्वपूर्ण चीज़ थी, हमने उसको ही स्वाभाविक कह दिया।

प्रश्नः– वास्तव में हमारे पास इलाज ही नहीं थे। हमने कोशिश भी किया लेकिन हमें समझ में ही नहीं आया कि क्या करें और फिर हमें आगे तो बढ़ना ही है।

उत्तरः– `थोड़ा-थोड़ा तनाव होना स्वाभाविक है' ये कहने पर थोड़े की परिभाषा, थोड़े का पैमाना कौन निर्धारित करेगा कि थोड़ा क्या है? क्योंकि आज हमारा तनाव परिस्थिति पर निर्भर है। हमने कहा परिस्थिति दबाव पैदा करती है। आज छोटी-मोटी परिस्थिति है तो हमने कहा कि थोड़ा-बहुत दबाव होना तो स्वाभाविक है। लेकिन क्या कल परिस्थिति हमें बताकर आयेगी! बगैर परिस्थिति कल हो सकता है कि आर्थिक संकट मुझे प्रभावित कर दे, कल हो सकता है कि मेरे घर पर कुछ हो जाये, व्यापार बंद हो जाये, प्राकृतिक आपदा आ जाये, ये सब चीज़ें ऐसी हैं जिसका हम पूर्वानुमान नहीं लगा सकते हैं।

तब क्या हम अपने तनाव पर काम कर पायेंगे कि उसे थोड़े वाले पर ही रखना है, बढ़ाना नहीं है। मान लो हम अपने तनाव को एक से दस तक की एक स्केल पर ले लेते हैं। आज मान लो कि मेरा तनाव नम्बर-2 पर है। लेकिन कल परिस्थिति बहुत ज़्यादा बढ़ गयी तो हमारे तनाव का स्तर तुरंत ही आगे बढ़ जाता है, वह दो नंबर पर स्थिर नहीं रहता है। और तब हम क्या कहते हैं कि क्या करें परिस्थिति ही ऐसी थी, ये तो होना ही था।

ब्र. कु. शिवानी

प्रश्नः– एक बात और बहुत से लोग कहते हैं, इस पर भी मैं जानना चाहती हूँ कि ये जो व्यक्ति है ना छोटी-छोटी बातों में बहुत परेशान हो जाता है, छोटी-छोटी चीज़ें इन्हें परेशान कर देती हैं लेकिन कोई बड़ी बात आ जाती है, तब सुरक्षित रहते हैं। यह किस प्रकार का व्यक्तित्व है?

उत्तरः– जब परिस्थिति बड़ी आ जाती है, तो वो अपनी ज़िम्मेवारी को महसूस कर लेते हैं। एक होता है छोटे-छोटे स्तर पर चिड़चिड़ा होना ये नहीं हुआ, वो नहीं हुआ, एक होता है जब बड़ी परिस्थिति आती है तो उनको अपनी ज़िम्मेवारी का एहसास होता है कि इस परिस्थिति का हमें कैसे सामना करना है। यह ज़रूरी नहीं है कि वो दबाव पैदा नहीं कर रहा है। लेकिन उनका ध्यान बहुत स्पष्ट है कि मुझे इस परिस्थिति को पार करना है, ये मेरी ज़िम्मेवारी है। छोटी-छोटी चीज़ों में तो वो परिस्थिति नहीं थी, वो हिचक अपना स्वाभाविक व्यवहार बना लिया। अब परिवार में कुछ बड़ी घटना घटित हो गयी, इसमें वो अपनी ज़िम्मेवारी लेते हैं कि ये मेरी ज़िम्मेवारी है, पूरे परिवार को, पूरी कम्पनी को, सबको साथ में लेकर चलना है। ऐसे समय पर वो अपने दबाव को, अपने साथ अंदर दबा लेते हैं और परिस्थिति को पार कर लेते हैं। लेकिन यह संभव नहीं है कि वो अपनी स्थिरता को, अगर वो छोटी चीज़ में स्थिर नहीं थे, तो बड़ी परिस्थिति में भी वो स्थिर नहीं होंगे। अगर घर में सारे लोग तनाव में हैं, तो हम तुरंत यही सोचते हैं कि मुझे ऐसा कुछ नहीं कहना है, जिससे कि ये और भी तनाव में आ जायें। मैं तुरंत अपने व्यवहार को बदल देता हूँ और बहुत ही सोच-समझकर बोलता हूँ जिससे किसी को दुःख न हो। और कई लोगों के साथ ऐसा भी होता है कि परिस्थिति को तो वो पार कर लेते हैं। जैसे परिवार में किसी सदस्य की मृत्यु हो गयी है, सब लोग बहुत दुःखी हैं, बहुत रो रहे हैं। एक है जो ज़िम्मेवारी लेता है कि हमें इस परिस्थिति को पार करना है, तो वो जैसे अपने दर्द को अंदर ही अंदर दबा देते हैं और सहजता पूर्वक उस परिस्थिति को पार कर लेते हैं। लेकिन इसके बाद वो कई बार बुरी तरह से टूट जाते हैं, क्योंकि उनके अंदर तो वो पूरा दर्द भरा हुआ है, वो निकला नहीं है, वो उन्हें सुख से जीने नहीं देता है। इसको हम कहेंगे कि उन्होंने स्ट्रेस क्रियेट नहीं किया लेकिन उसको अंदर दबा दिया, जिसके कारण वो अंदर ही अंदर घुटते रहते हैं। - क्रमशः

शांत अंतःकरण वाला योगी ही रहता परमात्म स्मृति में

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य -राजयोग

गतांक से आगे...

अर्जुन भगवान से प्रश्न पूछता है कि कब जीवात्मा स्वयं का मित्र वा शत्रु होता है?

भगवान ने बहुत ही अच्छी रीति से उसका जबाव दिया कि जब मन सहित इंद्रियाँ जीती हुई हैं तो वही मन मित्र है। जब मन सहित इंद्रियाँ परवश हैं, अधीन हैं, कहीं किसी आदतों के अधीन, कहीं किसी बुराइयों के अधीन हैं, कहीं कोई ईर्ष्या, द्वेष के अधीन हैं तो वह परवश है, तब मन उसका शत्रु है। जिसने मन को जीत लिया हो, ऐसा पुरुष मान, अपमान, सुख-दुःख, सर्दी-गर्मी में मन को शांत रख परमात्मा की स्मृति में समा जाता है। जो योगी अपने आध्यात्मिक ज्ञान और आत्म-अनुभूति से पूर्णतः संतुष्ट रहता है, ऐसे जितेन्द्रिय की दृष्टि में मिट्टी, पत्थर व कंचन एक समान हैं। वह भिन्न-भिन्न स्वभाव वाले व्यक्ति के प्रति भी समान भाव से व्यवहार करता है। संयम युक्त, अपरिग्रही योगी सदा एकांत में रह अपने मन को वश में कर निरंतर परमात्मा की याद में बुद्धि को एकाग्र करते हैं।

फिर ध्यान में यथार्थ रूप से बैठने की विधि बतायी। शांत अन्तःकरण, भय रहित, ब्रह्मचर्य व्रत में स्थित योगी को, पवित्र एकांत स्थान में आसन बिछाए, दृढ़तापूर्वक सीधा बैठकर, मन, इंद्रिय तथा कर्म को संयम में रखकर निराकार परमात्मा पर मन, बुद्धि और दृष्टि को एकाग्र कर हृदय के अंदर शुभ भावनायें भरकर योगाभ्यास करना चाहिए। वह योग उचित आहार-विहार, कर्मों में उपयुक्त चेष्टा और संतुलित शयन जागरण करने वाले का ही पूर्ण होता है। ये है योग के ध्यान की सही विधि। अब प्रश्न उठता है कि भगवान ने इस योग की विधि क्यों बतायी? उसके पीछे भी क्या गुह्य रहस्य है? क्योंकि जब ध्यान में बैठना होता है तो आजकल की दुनिया में हरेक को घुटनों की समस्या है, किसी को पीठ का प्रॉब्लम है, इसलिए मैं आपको ये तो नहीं कहूँगी कि आप नीचे बैठकर आसन लगाओ, क्योंकि कोई तकलीफ को बढ़ाना नहीं है। ऐसा न हो ध्यान लगाना चाहेंगे परमात्मा पर और ध्यान बार-बार जायेगा घुटनों में या पीठ में। तो भगवान का ध्यान कहाँ से लगेगा। जिस तरह से भी आप आराम से बैठ सकें, लेकिन भगवान ने ये बात भी क्यों कही इसके पीछे भी एक साइंस है। ध्यान में बैठने के लिए जो कहा कि एकांत स्थान में आसन बिछाए, दृढ़तापूर्वक सीधा बैठें। सीधा बैठने के लिए क्यों कहा आसन बिछाकर के, क्योंकि मनुष्य के शरीर में तीन द्वार हैं जहाँ से हमारी एनर्जी निकलती है। उसमें पहला द्वार है पैर। यहाँ से बहुत एनर्जी बाहर निकल जाती है। इसलिए लोग महात्माओं के सनिध्य में जब जाते हैं तो चरण-स्पर्श करते हैं। इस तरह से करते हैं कि वहाँ से जो एनर्जी निकल रही है वह हमारे तरफ आये। लेकिन वह आती नहीं है, ये खाली एक भावना है, कि वहाँ से जो एनर्जी निकल रही है वह हमें प्राप्त होती है। कई लोग गुरु के चरणों को थाली में रखकर धोते हैं और उस पानी को चरणामृत के रूप में बांटते हैं। उस एनर्जी को पानी में ले लिया और सभी को बांटा। अर्थात् उस पानी को पीयेंगे तो हमारी आत्मा भी चार्ज हो जायेगी। ऐसे कोई आत्मा चार्ज नहीं होती है। ये एक अंधश्रद्धा का रूप ले चुका है। लेकिन वास्तव में आसन बिछाकर के इस आसन में बैठने का भाव यही है कि जब पैरों को मोड़ देते हैं, एनर्जी वहां से निकलना बंद हो जाती है। इसलिए पैरों को मोड़ा जाता है। वो ऊर्जा फिर ऊपर की ओर आती है मस्तिष्क में, जो एकाग्रता के लिए आवश्यक है, वो ऊर्जा उसके काम में आ जाती है। वो ऊर्जा बहुत ज़रूरी है। इसलिए पहले के ज़माने में घरों में सोफासेट नहीं होता था, बैठकें होती थीं। भोजन के लिए भी कोई डायनिंग टेबल नहीं होते थे और न ही कुर्सी होती थी। नीचे बैठकर भोजन करते थे। आज भी कई परिवारों में नीचे बैठकर ही भोजन किया जाता है।

- क्रमशः

शिव अवतरण

ओमशान्ति मीडिया

महाशिवरात्रि विशेषांक

काल चक्र की अंतिम वेला

जिसे आप तलाश रहे हैं वो ही आकर कह रहा है, तुमने मुझे पहाड़ों में ढूंढ़ा, कंदराओं में ढूंढ़ा, मंदिरों में तलाशा, चारो धाम की यात्रा भी की, फिर भी मुझे नहीं ढूंढ़ पाये। ढूंढ़ भी कैसे पाते, जो खुद को ही भूला हुआ हो, वो खुदा को कैसे जान पायेगा! जब खुद की ही आँखें बंद हैं तो मुझे देख भी कैसे पायेंगे! अरे! ये तो सुना था कि शिव जयंती पर ही परमात्मा का दिव्य अवतरण होता, इसी यादगार शिव जयंती के महान पर्व पर ही मैं इस धरा पर आकर आपको ज्ञान का प्रकाश देकर जगाता और मैं खुद कहता कि तुम मेरे हो, मैं तुम्हारा हूँ। तो जागो, मुझे जानो, पहचानो, इस समय मैं आया हूँ। आप सभी को मुक्ति देने, जीवन को खुशहाल बनाने की तरकीब बताने। शिवजयंती के इस महान पर्व का इंतज़ार अब पूरा हुआ। क्यों यात्राएं करके खुद को थकाते हो। अरे! सुकून भरी ज़िन्दगी जीयो ना। ऐसी सुकून भरी ज़िन्दगी देने के लिए एक नई दुनिया का नवनिर्माण अब अंतिम चरण पर है। तो देर ना करो, चरण बढ़ाओ और हमारे गुणों को आचरण में धारण करो...

ज़िन्दगी के साज़ को आवाज़ देने के लिए एक परा व सुखकारी कलाकार की ज़रूरत है। एक ऐसी अदाकारी जहाँ सब कुछ थम जाए, बस एक निर्वाण की स्थिति हो, जिसमें से निकलने का हमारा बिल्कुल भी मन ना हो, अगर निकले तो उसी में बार-बार जाने का मन करे। सभी को ऐसी ही ज़िन्दगी की तलाश है जहाँ काया नहीं, माया नहीं, बस मैं हो... बस...मैं! ज़िन्दगी के सेतु को बनाने वाले का इंतज़ार हम कब तक करेंगे। हे हमारे जगत के तारणहार आ जाओ, बस आ जाओ।

आप इस दृश्य को ज़रा ध्यान से देखिए, इसमें आपको नज़र क्या आ रहा! लगता नहीं है कि सभी एक मुद्रा में, एकटक किसी को निहार रहे, किसी की बाट जोह रहे या फिर किसी का इंतज़ार कर रहे हैं। काल चक्र की अंतिम वेला, बस घड़ी की सुई मिलने ही वाली है, सब कुछ बदलने ही वाला है। समय की धूरी पर खरा उतरना हमारा काम है, और हम हैं कि पता नहीं कहाँ खोए पड़े हैं।

अरे मानव! भोर भई कि भई, अब कब तक सोओगे! बहुत सुनहरे भविष्य को दिखाने वाला कब से कह रहा कि, हम तो दिए ही जा रहे हैं, आप ले ही नहीं पा रहे, क्योंकि आप अपनी ही उलझनों में उलझे हुए हैं। उलझनों का अंत हो सकता है, यदि आप चाहें तो। क्योंकि आराम की ज़िन्दगी गुज़र बसर तब होगी जब हम उसे जानेंगे, पहचानेंगे, मानेंगे, उसकी धार में बहेंगे। कई मानवमात्र सिर्फ इसी सोच में हैं, कुछ नहीं बदलने वाला, सब ऐसे ही चलने वाला, नहीं! बदल चुका है, हम आपको उदाहरण दिखा सकते हैं, परन्तु उन उदाहरणों को देखने के लिए भी तो समय निकालना पड़ेगा ना! देखना सब कुछ चाहते हो, और आँखें खोलना नहीं चाहते! अरे प्यारों! अब तो जागो, समय को पहचानो कि क्या हो रहा है...? जिसे आप खोज रहे हैं वो ही आकर कह रहा है, तुमने मुझे पहाड़ों में ढूंढ़ा, कंदराओं में ढूंढ़ा, मंदिरों में ढूंढ़ा, चारो धाम की यात्रा की, फिर भी मुझे नहीं खोज पाये। खोज भी कैसे पाते, जो खुद को ही भूला हुआ हो, वो खुदा को कैसे जान पायेगा! जब खुद की ही आँखें बंद हैं तो मुझे देख भी कैसे पायेंगे! अरे! ये तो सुना था कि शिव जयंती पर ही परमात्मा का दिव्य अवतरण होता, इसी यादगार शिव जयंती के महान पर्व पर ही मैं इस धरा पर आकर आपको ज्ञान का प्रकाश देकर जगाता और मैं खुद कहता कि तुम मेरे हो, मैं तुम्हारा हूँ। तो जागो, जानो, पहचानो, इस समय मैं आया हूँ आपको इस उलझी ज़िन्दगी से मुक्त कराने। अब काल कंटक, दु:ख हर्ता आया है दु:ख हरने और जहाँ ज़िन्दगी सुकून, चैन व खुशियों भरी सुखदायी हो, ऐसी दुनिया बनाने। अब दु:ख के बादल छटकर हो रहा है सुख का आगाज़, बस उठो, भर लो झोली और चलो अपनी उस दुनिया में...

शुभकामना संदेश

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

विश्व में सभी को जिस सुख शांति आनंद की तलाश है, उसका आधार ज्ञान है, और ज्ञान देने वाला ज्ञान दाता परमपिता परमात्मा निराकार शिव हैं। जब हमारे अंदर ज्ञान होगा तो हम अपने आपको ज्ञान के आधार से हर समय खुश व शांत रख सकते हैं। हमारे दिल को चैन व आराम देने के लिए दिलाराम परमात्मा शिव अब इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं। हम उनसे असीम सुख ले रहे हैं। मैं चाहती हूँ कि सभी उस दिलाराम परमात्मा का सुख लें। अब वो सुनहरी घड़ियाँ हम सबकी नज़रों के सामने आने ही वाली हैं, क्योंकि परमात्मा शिव के आगमन से नई दुनिया का आगमन निश्चित है। हमारे आत्मिक पिता शिव का अवतरण हो चुका है यह संदेश जन-जन तक पहुँच जाये और हर आत्मा सुख-शांति-पवित्रता का वर्षा ले ले यही महा शिवजयंती के अवसर पर हमारी शुभ भावना है। इन्हीं शुभ आशाओं के साथ शिवजयंती पर्व की कोटी-कोटी व हार्दिक शुभकामनाएँ।

योग से ही सम्पूर्ण परिवर्तन संभव

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

बढ़ता तनाव, उससे होने वाले प्रभाव को कोई भी अनदेखा नहीं कर सकता। हमारा शरीर सम्पूर्ण प्रकृति को दर्शाता है। जब हमारी प्रकृति ही बदल जायेगी तो उससे हम कितने दिन तक चल पायेंगे। आज हमारा इंद्रियों पर संयम नहीं है। सम्पूर्ण प्रकृति का नियंत्रण हम सब कर सकते हैं, किंतु इसके लिए स्वयं को समझना होगा। समझने के लिए अपने को समर्पित करना होगा, उस आस्था में, विश्वास में जो ईश्वर के साथ ही हो सकता है। अरे! शरीर तो एक साधन है परमशक्ति को अनुभव करने का, उसी को आप असंयमित होकर नष्ट कर रहे हैं। परमात्मा से योग हमारी शारीरिक, मानसिक क्षमता को बढ़ाता है, हमारी विशेषताओं को विकसित करता है। बस इसके लिए सत्य ज्ञान की आवश्यकता है। अब हमारे पास ना ही ज्ञान है, ना अनुभव, इसलिए कठिन लगता है। **अरे ! यह बहुत ही सरल है, जैसे बीज में वटवृक्ष है, वैसे ही हमारे अंदर नर से नारायण बनने की असीम क्षमता है। परमात्मा से योग ही हमें नर से नारायण बना देगा, और वह संभव होगा राजयोग से।**

अपने परमपिता रहते परमधाम में

शिव परमात्मा सर्व का रचयिता है जिसे त्रिमूर्ति, तीनों लोकों का मालिक, त्रिलोकीनाथ और तीनों कालों को जानने वाला त्रिकालदर्शी कहते हैं। वो सर्व आत्माओं का पिता है। उसका रूप ज्योतिर्बिन्दु है, और वो परमधाम निवासी है। शिव का अर्थ है कल्याणकारी। परमात्मा निराकार है, इसका अर्थ ये नहीं कि उसका कोई आकार नहीं है, बल्कि उसका कोई शरीर नहीं है। आकार का अर्थ स्थूल आँखों से न दिखने वाला सूक्ष्म ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है।

हम जाने अनजाने अपना हाथ अथवा मुख ऊपर की ओर उठाते हैं, क्योंकि यह स्मृति परमपिता परमात्मा की है जो ऊपर परमधाम में निवास करते हैं। वो देवताओं के सूक्ष्मलोक से भी ऊपर एक कर्मातीत रूप से फैला तेज़ सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है जिसको अखण्ड ज्योति महतत्व अथवा ब्रह्म-तत्व कहते हैं। यह पाँच प्राकृतिक तत्वों से अति सूक्ष्म है। इसका साक्षात्कार दिव्य-चक्षु द्वारा ही हो सकता है। इस स्थान को ब्रह्मलोक, परमधाम, शांतिधाम, निर्वाणधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। वे वहाँ वास करते हैं।

जिसे पूजा, वही हुए धरा पर अवतरित

ईश्वर हमपर मेहरबान हो, तभी तो हम उसकी बंदगी करते आये अभी तक। हमें ये कहते हुए बहुत अच्छा महसूस होता कि वही ईश्वर अब अपने भक्तों को या यूं कहें कि अपने बच्चों को उनकी पूजा, भक्ति, बंदगी का फल देने हेतु इस धरा पर धरती के एक अतिश्रेष्ठ मानव के तन से अपना दर्शन करा हमको दर्शनीय मूर्त बनाने के लिए आ चुके हैं। बस इंतज़ार है तो आपके पहचानने की उस भोलेनाथ को...!!!

कर्म-बन्धन के कारण गर्भ से उत्पन्न होने पर आत्माएं जन्म-मरण के चक्र में पड़ जाती हैं। लेकिन परमात्मा का आवागमन नहीं होता। वह पुनर्जन्म के चक्र से परे है। कर्मातीत होने के कारण परमात्मा किसी के गर्भ में नहीं आता। कोई माँ उस सर्वशक्तिमान् को अपने गर्भ में धारण नहीं कर सकती। जगत्-पिता का कोई पिता नहीं हो सकता। परमात्मा शिव स्वयंभू हैं। सर्व-आत्माओं के कल्याणार्थ वे अवतरित होते हैं अर्थात् परकाया प्रवेश करते हैं। वे योग-बल से प्रकृति को वश में कर एक मनुष्य तन में प्रवेश करते हैं और उसके मुख द्वारा सर्व जीवात्माओं को प्राय: लुप्त गीता-ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर अधर्म का विनाश तथा सत्-धर्म की पुनर्स्थापना कराते हैं। भारतवर्ष में योगियों के परकाया प्रवेश की बात तो सर्व-विदित है। फिर परमात्मा शिव तो योगियों के भी ईश्वर हैं।

परमात्मा का अवतरण ज्ञान-योग की शिक्षा देकर जीवात्माओं को पतित से पावन बनाने के लिए होता है। यदि वे गर्भ से जन्म लें तो गर्भ का समय और बाल्यावस्था का समय व्यर्थ चला जाये। युवावस्था भी बुज़ुर्गों को शिक्षा देने के लिए उपयुक्त नहीं है। आध्यात्मिक शिक्षा तो वानप्रस्थ अवस्था में ही प्रभावोत्पादक ढंग से दी जा सकती है, जब मनुष्य अनुभव-सम्पन्न हो जाता है। गर्भ से जन्म लेने पर परमात्मा को ज्ञान देने के पूर्व पचास वर्ष शरीर को परिपक्व बनने की प्रतीक्षा में लगाना पड़ेगा। अत: परमात्मा एक वृद्ध, अनुभवी तन में दिव्य-प्रवेश करते हैं और उसके द्वारा तुरंत ही ज्ञान-योग की शिक्षा देने लगते हैं। वो तन प्रजापिता ब्रह्मा का होता है, जिसके आधार से परमात्मा का जन्म माना जाता है। यह जन्म अलौकिक है, दिव्य है, अत: इसे समझने के लिए हमें दिव्य बुद्धि की भी ज़रूरत है। चूंकि परमात्मा से सम्बन्धित ज्ञान के लिए थोड़े धैर्य की आवश्यकता है, इसलिए हम इस लेख के माध्यम से आपको सारी बातें विस्तार में नहीं बता सकते, इसके लिए आपको थोड़ा सा समय इन सब बातों को समझने के लिए देना होगा।

शिवरात्रि हर बार आयेगी, लेकिन परमात्मा शिव कल्प में एक ही बार आते हैं, और वे आ चुके हैं। कब, क्यों, कैसे, उसे जानने हेतु आप समय अवश्य दें।

ऐसा विद्यालय हमने देखा नहीं कहीं- अण्णा हज़ारे

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के माध्यम से आप सब लोग जो सेवा कर रहे हैं उस सेवा की महिमा के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है, उस सेवा की कोई कीमत नहीं हो सकती है। ऐसी सेवा को मैं नमन करता हूँ। इतना बड़ा त्याग करना आसान नहीं है। यह तो परमात्मा शिव की कृपा हमारे ऊपर हुई जो हम उनके सानिध्य में आ गये, वरना ये सबके भाग्य में नहीं है। उसके लिए प्रालब्ध होना चाहिए, हमारा पुण्य कर्म संचित है, तभी हमें परमात्मा शिव बाबा के पास आने का सौभाग्य मिलता है। ब्रह्माकुमारीज़ के विद्यालय तो बहुत हैं, देश में हैं, विदेश में हैं, कम विद्यालय नहीं हैं। उन सब विद्यालयों का एक ही उद्देश्य है सुसंस्कृत इंसान का निर्माण। हमने बहुत से लोगों का निर्माण किया है, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील बनाये लेकिन जिस संस्कार की आवश्यकता थी वो हम नहीं दे पाये, लेकिन ये विद्यालय हर व्यक्ति चाहे वो कोई भी हो, उसे बिना अपेक्षाओं के सुसंस्कृत इंसान बनाने का कार्य कर रहा है।

ऐसे होते हैं निराकार 'शिव' प्रकट

'मैं' हुआ ब्रह्मा के ललाट से प्रकट...

शिव पुराण में भी लिखा है कि भगवान शिव ने कहा - ''मैं ब्रह्मा जी के ललाट से प्रगट होऊंगा।'' आगे लिखा है कि - ''इस कथन के अनुसार समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्मा जी के ललाट से प्रगट हुए और उनका नाम 'रूद्र' हुआ।''

शिव पुराण में यह भी लिखा है कि ''जब ब्रह्मा जी द्वारा सतयुगी सृष्टि रचने का कार्य तीव्र गति से नहीं हुआ और इस कारण वह निरुत्साहित थे, तब शिव ने ब्रह्मा जी की काया में प्रवेश किया, ब्रह्मा जी को पुनर्जीवित किया और उनके मुख द्वारा सृष्टि रची।'' शिव पुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है कि भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उस द्वारा सतयुगी सृष्टि को रचा। इस पौराणिक उल्लेख का भी यह भाव है कि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मस्तिष्क (ललाट) में अवतरित हुए और उनके मुख द्वारा ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर उन्होंने संसार का कल्याण किया। महाभारत में लिखा है कि भगवान ने ब्रह्मा के तन में प्रविष्ट होकर ज्ञान दिया और सतयुग की पुन: स्थापना की।

स्वयं गीता में भी लिखा है कि मैंने पहले यह ज्ञान विवस्वान को दिया था। सोचने की बात है कि सृष्टि के आदि में वह आदिम वक्ता कौन था? ब्रह्मा ही को तो 'आदिदेव' और शिव ही को स्वयंभू अथवा आदिनाथ कहा गया है। ध्यान देने की बात है कि आद्य शंकराचार्य ने भी अपने भाष्य में इस श्लोक की व्याख्या करते हुए कहा है कि भगवान ने नई सृष्टि रचने के समय (सर्ग) ही यह ज्ञान दिया था तथा योग सिखाया था। स्पष्ट है कि तब ज्योतिस्वरूप परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ही यह ज्ञान दिया होगा। इसलिये ही भारत के प्राय: सभी प्राचीन धर्म-ग्रन्थों में ज्ञान के उद्गम के साथ ब्रह्मा और शिव ही का नाम जुड़ा हुआ है। स्वयं महाभारत में भी लिखा है कि भगवान ने नई सृष्टि की रचना के लिये ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया। परंतु चूंकि बाद में वैष्णवों ने महाभारत को वैष्णव ग्रन्थ बनाने के यत्न किये, इसलिये उन्होंने लिख दिया कि नारायण ने ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया। परन्तु इसी श्लोक में जो 'प्रभुख्यय:' शब्द हैं, वे ही इस बात को सिद्ध करते हैं कि ज्योतिस्वरूप, अविनाशी परमात्मा ही के प्रवेश होने के बारे में कहा गया है। नारायण तो स्वयं ही विवस्वान थे, अर्थात् सूर्यवंशी थे। गीता-ज्ञान जानने वालों में ब्रह्मा ही को भागवत् आदि ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। तब अवश्य ही ब्रह्मा को परमात्मा ही ने यह ज्ञान दिया होगा और उसे माध्यम बनाकर अन्य आत्माओं को भी गीता-ज्ञान सुनाया होगा।

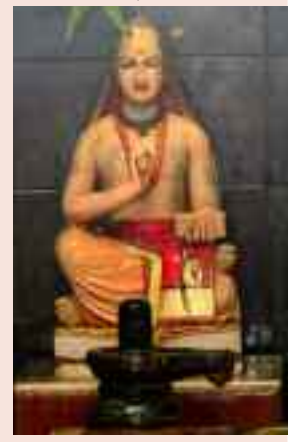

यादगार बने वे पल

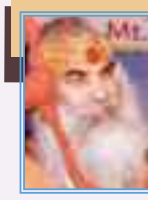

जो पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर शिव बाबा हैं उनसे ध्यान लगाकर, मार्गदर्शन लेने का जहाँ एकत्रिकरण हो, जहाँ सभी लोग एक साथ बैठकर उनकी अनुभूति करें, वह है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय। जो विद्या साक्षात् ईश्वर की प्राप्ति करा दे यह वही ज्ञान है। अगर विश्व में सुंदरतम से सुंदरतम कोई स्थान है तो वह है माउण्ट आबू में स्थित ब्रह्माकुमारीज़ आश्रम। ईश्वर की प्राप्ति केवल यहीं हो सकती है। **-डॉ. स्वामी केशवानंद सरस्वती,काशी।**

प्रेम का अद्भुत अनुभव

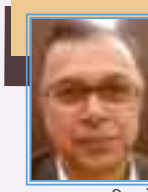

इस ईश्वरीय ज्ञान से हमारे लाइफ के प्रति जो सोचने का नज़रिया होता है वो बिल्कुल ही बदल जाता है। ये एक बिना दवाई के वण्डरफुल ट्रीटमेंट है। मन की ऐसी कई बीमारियां हैं जिनकी कोई दवाई नहीं की जा सकती, लेकिन यहां मेडिटेशन के प्रैक्टिस से तथा परमात्मा की याद से ये बीमारियां पूरी तरह ठीक हो जाती हैं। पहली बार जब मैं बाबा से मिला तो मेरे शरीर के सारे रोंगटे खड़े हो गए थे और आज भी मैं परमात्मा के उस मिलन को भूल नहीं पाता। **-डॉ.एस.पी.लोचड, सीनियर साइन्टिस्ट, हेल्थ फिज़िक्स डिपार्टमेंट, न्यूक्लियर साइंस सेंटर, नई दिल्ली**

इस ज्ञान के अलावा सब सारहीन

सभी को जीवन जीने की कला परमात्मा स्वयं इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से देते हैं। इसीलिए इसे गॉडली यूनिवर्सिटी कहा जाता है। जब मैं परमात्मा से मिला तो मेरे सारे व्यर्थ संकल्प समाप्त हो गए और पॉज़ीटिव संकल्पों की रचना होने लगी, मेरे शरीर में ऊर्जा का सतत् प्रवाह होने लगा और ऐसा अनुभव हुआ कि इसके अलावा दुनिया में सब कुछ सारहीन है। इस दुनिया का परिवर्तन इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से ही संभव है। **-बी.डी. राठी, हाई कोर्ट जज,ग्वालियर।**

परमात्मा से महापरिवर्तन का नया दौर

नये समाज के निर्माण की व्यथा किसी से छिपी हुई नहीं है। जब भी ऐसा कोई कार्य होता, उसमें बाधाएं भी आती हैं और हम हर समय एक नई चुनौती के लिए तैयार भी रहते। आपको हम बता दें कि हम यहाँ स्वर्णिम समाज की बात कर रहे हैं, जहाँ हमारी खुद की अपनी मंसा को साफ और हृदय को निर्मल बनाना होगा। यह एक ऐसा समाज है जिसमें व्यक्ति स्वयं ही स्वयं की बाधा है, उसकी प्रतिस्पर्धा भी स्वयं से ही। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि इसका कर्ता-धर्ता स्वयं परमात्मा है। और यदि परमात्मा ऐसा समाज बनायेगा तो कैसा होगा! ऐसा महापरिवर्तन जिसको पूरी दुनिया सोच भी नहीं सकती...!!!

इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु भारत भूमि पर बड़े सहज व शांतिमय ढंग से महापरिवर्तन का नया दौर चल चुका है। और आपको आश्चर्यजनक लगेगा, परन्तु इसका बीड़ा स्वयं परमात्मा ने उठाया है। अरावली की श्रृंखला में बसा पवित्र स्थान माउण्ट आबू में परमात्मा शिव निराकार ज्योतिर्बिन्दू अपने साकार माध्यम, पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर यह कार्य करवा रहे हैं। इस महापरिवर्तन में वे लोग शामिल हैं जिन्होंने स्वेच्छा से पवित्रता को अपनाया है। जैसे गौतम बुद्ध जी ने कहा कि इच्छाएं ही मनुष्य के दु:ख का कारण हैं। तो बस हमें इच्छाएं कम करनी हैं। उसके लिए आत्मा की खुराक को समझना है। क्योंकि आत्मा सतोगुणी है, इसकी मानवीय इच्छाएं इन्द्रियों के असंयम के आधार से हैं। इसलिए हे

आत्मायें! बस अपने को आत्मा समझकर चलना, कार्य करना है। शक्ति के लिए बार-बार हमसे जुड़ना है। यही परमात्मा हमसे कहते, और इसी के आधार से पूरे विश्व को एक नये दौर में ले जाते हैं। यह पूर्णत: स्वैच्छिक है, आप भी क्यों नहीं इस विधि को अपनाकर देखते हैं। यह कार्य चूंकि 80 वर्षों से अनवरत चल रहा है। महापरिवर्तन का यह दौर बस चंद दिनों का है। हम सभी के पिता शिव निराकार परमात्मा अपको भी यह मौका देना चाहते हैं कि आओ आपको भी ऐसी पावन दुनिया में ले चलूं जहाँ बिना मेहनत सब कुछ मिल जायेगा। कुछ नहीं करना है वहाँ, लेकिन उसके लिए यहाँ मेहनत करनी है।

कर्म की कहानी कही 'गीता' में शिव ने

'भगवान' अथवा 'परमात्मा' जो सारी सृष्टि का माता-पिता, अविनाशी शिक्षक तथा एकमात्र सद्गुरु अर्थात् सद्गति दाता है। निराकार शिव वास्तविक रूप में परमात्मा का नाम है। परमात्मा अपने साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा जो ज्ञान देता है वो अति सहज है जिसे कोई भी अपना सकता है। गीता शब्द गीत से बना है, चूंकि गीत बहुत ही मधुर और मनमोहक होता है जिसे सभी लोग सुनते हैं और आनंद विभोर हो जाते हैं। वैसे ही यह ज्ञान भी एक गीत की तरह है जिसे बहुत ध्यान से सुनकर उस पर अमल कर उसका आनंद ले मनमोहक 'कृष्ण' पैदा होता है। परमात्मा शिव सच्चा गीता ज्ञान दाता है, जिस गीता को सुनकर ही मनमोहन की तरह बना जा सकता है। श्रीमद्भगवद् गीता के लिए संसार में लोग कहते हैं कि इसे सुनकर मोक्ष व स्वर्ग की प्राप्ति होती है और जीवन के अंतिम क्षणों में गीता ज़रूर सुननी चाहिए, ये एक मान्यता है। ये विचारणीय है कि बहुतों ने इस जीवन के दौरान और अंतिम क्षणों में गीता सुनी व पढ़ी है लेकिन क्या उन्हें मोक्ष या स्वर्ग मिला होगा? आज उसी मोक्ष व स्वर्ग को दिलाने के लिए परमात्मा स्वयं इस धरा पर अवतरित हो सहज गीता ज्ञान से स्वर्णिम संसार लाने का अद्भुत कार्य कर रहे हैं। वैसे भी गीता में वर्णित है कि मुझ परमात्मा को समझने व जानने के लिए दिव्य चक्षु अर्थात् दिव्य ज्ञान चाहिए। उसके बिना मैं जाना नहीं जा सकता। भगवान शिव के इस ज्ञान को ही गीता कहा जाना चाहिए, ऐसा हमारा मानना है। जिसे सभी समझकर उस

राह पर चल अपने जीवन में अपनाकर देवत्व ला सकते हैं। श्रीकृष्ण के भी परमपिता शिव हैं। श्रीकृष्ण ने तो उन परम सद्गुरु शिव से ही वह श्री नारायण पद प्राप्त किया था। इसलिए वृन्दावन में गोपेश्वर का मंदिर है जिसमें श्रीकृष्ण को शिव की पूजा करते हुए दिखाया गया है।

प्रेम ही जीवन का सत्य है

ई.आई. मालेकर, मानद सचिव,यहूदी धर्मसभा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमें सभी के धर्मग्रन्थों का सम्मान करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी धर्मों की शिक्षाएं समान हैं, अगर अंतर है तो उनको सिर्फ जीवन में उतारने का। जीवन का असली सत्य यही है कि हम सबसे प्रेम से व्यवहार करें, सबको सहयोग दें और जो व्यवहार मेरे अनुकूल ना हो वैसा दूसरों से न करें।

ब्रह्मदेव ने माना 'ब्रह्मतत्व' निवासी निराकार शिव परमात्मा का अस्तित्व

त्रिनिदाद वैदिक विश्वविद्यालय के उपकुलपति स्वामी ब्रह्मदेव ने कहा कि शिवरात्रि निराकार ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप ज्योतिर्लिंग परमात्मा शिव का मनुष्य समाज में व्याप्त अज्ञान अंधकार दूर करने हेतु अवतरित होने का यादगार दिवस है। उन्होंने कहा कि केवल पूजा-पाठ, व्रत आदि से ही नहीं, अपितु शिव के वास्तविक निराकार स्वरूप की पहचान तथा राजयोग द्वारा उनके साथ अंतरात्मा के सर्व सम्बन्धों की याद से ही मनुष्य अपने पापों को भस्म कर सकता है। उपरोक्त धर्म के पुरोधों ने तथाकथित रुप से परमात्मा शिव के अस्तित्व को स्वीकारा, चाहे वह अंशत: ही क्यों न हो!

परमात्मा की तरह बेहद हम भी बनें

गुरूबचन सिंह, उपाध्यक्ष, दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधन समिति ने कहा कि परमात्मा ने जब मनुष्य को रचा तो उसको अपने जैसा बनाया। जिस तरह परमात्मा बेहद है, हमारी सोच भी बेहद होनी चाहिए। हमारा जीवन सिर्फ अपने लिए नहीं है, इसका महत्व तभी है जब हम दूसरों के काम आते हैं।

ज्योति स्वरूप को सभी ने माना भगवान

डॉ. एस.एम. मिश्रा, संस्कृत विश्व-विद्यालय कुरुक्षेत्र ने कहा कि सभी धर्मों में परमात्मा को प्राय: ज्योति के रूप में ही माना जाता है, और शिवलिंग भी ज्योति स्वरूप का ही पर्याय है। हमारे देश में जितने भी प्रमुख शिव मंदिर हैं उनको ज्योतिर्लिंगम के नाम से ही जाना जाता है। अनेक भाषाओं और अनेक सिद्धान्तों के कारण लोगों में मतभेद पैदा हुए हैं। आज हमें आवश्यकता है कि हम ईश्वर की एकरूपता को स्वीकार कर सबका सम्मान करें। इस संसार का पतन तब से शुरु हुआ जबसे हमने उसको अलग-अलग समझना शुरु कर दिया।

हम सब एक ईश्वर के बंदे

मो.अहमद,राष्ट्रीय सचिव, जमात इस्लाम हिन्द ने कहा कि खुदा प्यार के साथ-साथ न्यायकारी भी है, इसलिए हमें भी चाहिए कि सबके साथ न्याय हो। हम सब उसके बन्दे हैं। किसी के साथ भेदभाव नहीं हो तभी इस विश्व में शान्ति और अमन कायम हो पायेगा।

वो और उसका प्यार सबके लिए समान

डॉ. एम.डी. थॉमस,इन्स्टीट्यूट ऑफ हारमनी स्टडीज़ का कहना है कि आज हम परमात्मा को भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हैं, जबकि वास्तव में देखा जाए तो उसका एक ही रूप है। जिस प्रकार किसी एक ही वस्तु के अनेक देशों में भाषा के आधार से भिन्न-भिन्न नाम होते हैं, वैसे ही परमात्मा के भी अनेक नाम हैं। परमात्मा का प्यार सबके लिए समान है, वो किसी से भी जाति व धर्म के आधार से प्यार नहीं करता। जब हम उससे जुड़ते हैं तो हमें सारा ही विश्व एक परिवार लगता है।

निराकार ज्योति स्वरूप से ही किया सभी ने प्रेम

''किसी का दिल अगर जीतना है तो उसके प्रति सम्पूर्ण समर्पण चाहिए, ऐसा आप सब भी तो मानते ही हैं ना! वैसे भी प्रेम समर्पण का ही एक नाम है। प्रेम के लिए किसी को भी कोई विशेष प्रतिमा या आकृति या आकार की ज़रूरत नहीं पड़ती, इसमें तो सिर्फ गुणों पर फिदा होना होता है। अगर आकृति पर फिदा होंगे तो कहीं न कहीं से थोड़ा बहुत नुक्स निकाल ही लेंगे। शायद इसीलिए उस निराकार से प्यार करना सबको बहुत सहज व सुखद लगा। और लगेगा भी क्यों नहीं, क्योंकि वह गुणों नहीं, सर्व गुणों का सागर है, हम सभी का चहेता है। जिसके आधार से इस सृष्टि में प्रेम बसता है, और इस दुनिया में हर किसी को, जिसका वो सागर है वही चाहिए, जैसे प्रेम, प्यार, स्नेह, और कुछ नहीं। बस यही हमारी, आप सबकी इच्छा भी तो है। तो उस प्रेम के सागर से आओ हम भी प्रेम कर लें। प्रेम की ऐसी ही कुछ झलकियाँ इन धर्म पिताओं, महात्माओं के द्वारा दर्शायी गई जिनकी भाषा और भाव को सुनकर पता चलता है कि वे परमात्मा से कितना प्यार करते थे...!!!''

ईसा ने ईश्वर के "दिव्य ज्योति" रूप से किया प्रेम

ईसा मसीह (जीज़स क्राइस्ट) ने गॉड को लाइट कहा है। उन्होंने कहा है, गॉड इज़ लाईट, **आई एम द सन् ऑफ गॉड।** जीज़स ने कभी यह नहीं कहा कि आई एम गॉड। उसने भी उस लाईट को परमात्मा का स्वरूप बताया।

उस ज्योति 'जेहोवा' से किया प्रेम

ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया गया है कि जब हज़रत मूसा शिनाई पर्वत पर गए तो वहां पर उन्हें परम ज्योति का साक्षात्कार हुआ जिसको देखते ही हज़रत मूसा ने कहा **'जेहोवा'**। उस तेज को नाम दिया जेहोवा और उस प्रकाश ने उसको दो पत्थरों पर दस आदेश दिए जो आज भी उनके ओल्ड टेस्टामेंट में लिखे हुए हैं, का प्रतीक है।

दे शिवा वर मोहे

सिक्खों के धर्म-स्थापक गुरु नानक जी ने भी परमात्मा को ओंकार कहा है जबकि ज्योतिस्वरूप शिव परमात्मा के एक प्रसिद्ध मन्दिर का नाम भी ओंकारेश्वर है। गुरु गोविन्द सिंह जी के **'दे शिवा वर मोहे'** शब्द भी उनके परमात्मा शिव से वरदान मांगने की याद दिलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा शिव एक धर्म के पूज्य नहीं बल्कि विश्व के पूज्य हैं।

श्रीराम के ने भी पूजा 'शिव' को

परमात्मा शिव की पूजा रामेश्वरम् के रूप में स्वयं श्रीराम ने भी की है। शिव श्रीराम के भी भगवान हैं। सोचने की बात है कि अगर श्रीराम भगवान होते तो उनको उस निराकार ज्योतिर्लिंगम् की पूजा करने की क्यों आवश्यकता हुई? ये भी कहा जाता है कि किसी भी कार्य की शुरुआत करने से पहले परमात्मा का स्मरण अति आवश्यक है, ऐसा ही श्रीराम ने भी किया।

पारसियों में भी पारसनाथ से करते हैं प्रेम

पारसियों के अग्यारी में जाएंगे तो वहां पर होली फायर मिलता है। कहा जाता है कि पारसी लोग जब ईरान से भारत में आए तो जलती हुई ज्योत का टुकड़ा लेकर आए और उसको कहा कि यह अखण्ड ज्योत है। आज भी नई अग्यारी स्थापन होती है तो वो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा लेकर वहां स्थापित करते हैं।

गिरजाघर का रहस्य

रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहते थे। वहीं इटली में गिरजा में शिवलिंग की प्रतिमा रखी जाती रही है। गिरजा शब्द गिरिजा से बना है। गिरिजा का अर्थ पार्वती है। सभी आत्माओं रूपी पार्वतियों के प्रति परमात्मा शिव की प्रतिमा इनमें स्थापित हुई रहती थी। इसलिए चर्च का नाम गिरजाघर है।

श्रीकृष्ण को भी मोहा शिव ने

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने भी थानेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता निराकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से भी शिव की पूजा करवाई तथा युद्ध में कौरवों के ऊपर विजय प्राप्त की।

मुस्लिमों का प्रेम एक नूर से ही

मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्का में भी शिवलिंग के आकार का पत्थर है जिसे वे बड़े प्यार व सम्मान से चूमते हैं। उसे वे **संग-ए-असवद्** कहते हैं। परन्तु वे भी इस रहस्य को नहीं जानते हैं कि उनके धर्म में मूर्ति पूजा की मान्यता न होते हुए भी शिवलिंग के आकार वाले पत्थर की स्थापना क्यों की गई है? उसको वे लोग **नूर-ए-इलाही** भी कहते हैं।

जापान, चीन, बेबीलोन में भी निराकार से प्रेम का चिन्ह

जापान में शिकोनिज़म सेक्ट वाले तीन फीट की ऊंचाई पर और तीन फीट दूर बैठकर एक थाली में रखे लाल पत्थर पर ध्यान लगाते हैं और इस पवित्र पत्थर को 'करनी का पवित्र पत्थर' कहते हैं। उसका नाम दिया है **चिंकोनसेकी** जिसका अर्थ शान्ति का दाता है और वे उसे परमात्मा का स्वरूप मानते हैं। **चीन** में शिवलिंग को **हुवेड-हिफुह** कहा जाता था और इसी नाम से इसकी पूजा होती थी। **बेबीलोन** में शिवलिंग को **शिउम्** कहा जाता था। **मिस्र** में भी **सेवा** नाम से पूजा होती थी। **फिजी** देश के निवासी शिव को **'सेवा'** या **'सेवाजिया'** के नाम से पूजते हैं।

शिवरात्रि का त्योहार खुशियों की बहार

आज हम सभी अपने मन को या यूं कहें कि अपने आपको खुशी देने हेतु अन्यानेक खुशियों के अल्पकालिक हथकंडे अपना रहे हैं। फिर भी इस चकाचौंध में हमें खुशी की झलक नाममात्र ही मिल पा रही है। मिलेगी भी कैसे, क्योंकि खुशी विनाशी और बदलने वाली चीज़ों में नहीं है, यह हम नहीं खुद परमात्मा हमसे कह रहे हैं। परमात्मा निराकार शिव जो खुशियों का सागर है, वो हमें खुशी की चाबी देने आये हैं। लेकिन उस खुशी की चाबी को लेने के लिए सबसे पहले अपने अंदर के खज़ानों को बढ़ाना होगा, जैसे शांति, प्रेम, पवित्रता को बढ़ाना होगा। परमात्मा कहते हैं, मेरे बच्चों! अब मैं आपको सबकुछ दूंगा, बस एक काम करो कि अपने मन को इन फालतू कचरों, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से दूर करो। इसके लिए बस आपको जागना है, जागना अर्थात् हर पल, हर क्षण अपने विचारों में खुशी के विचार डालते रहना। अरे! मैं तुम्हारा पिता हूँ, मैं खुशी का सागर हूँ और सागर के बच्चे दु:खी हों, ये अब मुझसे देखा नहीं जाता, इसलिए इस महाशिवरात्रि पर तुम सभी बच्चे मेरे से प्रतिज्ञा करो कि हम इन सभी विकारों का दान देकर और खुशियों की चाबी आपसे लेकर ही छोड़ेंगे। बस हम इंतज़ार कर रहे हैं बाहें पसारे आपके इस संकल्प का। देखते हैं कौन-कौन से बच्चे इसमें नम्बर वन लेते हैं अपने अंदर भरे हुए दुर्गुणों को, दुष्कर्मों को निकालने में! गीता में सुनाई हुई बातों को चरित्रार्थ करने का यही समय है। मेरे लाडलों! अब जाग जाओ, समय बहुत थोड़ा है, भर लो झोली खुशियों से।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

कथा सरिता

कहीं पछताना ना पड़े!!!

एक अतिश्रेष्ठ व्यक्ति थे, एक दिन उनके पास एक निर्धन आदमी आया और बोला कि मुझे अपना खेत कुछ साल के लिये उधार दे दीजिये, मैं उसमें खेती करूंगा और खेती करके कमाई करूंगा, वह अतिश्रेष्ठ व्यक्ति बहुत दयालु थे। उन्होंने उस निर्धन व्यक्ति को अपना खेत दे दिया और साथ में पाँच किसान भी सहायता के रूप में खेती करने को दिये और कहा कि इन पाँच किसानों को साथ में लेकर खेती करो, खेती करने में आसानी होगी, इससे तुम और अच्छी फसल की खेती करके कमाई कर पाओगे। वो निर्धन आदमी ये देख के बहुत खुश हुआ कि उसको उधार में खेत भी मिल गया और साथ में पाँच सहायक किसान भी मिल गये। लेकिन वो आदमी अपनी इस खुशी में बहुत खो गया, और वह पाँच किसान अपनी मर्ज़ी से खेती करने लगे और वह निर्धन आदमी अपनी खुशी में डूबा रहा, और जब फसल काटने का समय आया तो देखा कि फसल बहुत ही खराब हुई थी, उन पाँच किसानों ने खेत का उपयोग अच्छे से नहीं किया था, ना ही अच्छे बीज डाले थे जिससे फसल अच्छी हो सके।

जब वह अतिश्रेष्ठ दयालु व्यक्ति ने अपना खेत वापस मांगा तो वह निर्धन व्यक्ति रोता हुआ बोला कि मैं बर्बाद हो गया, मैं अपनी खुशी में डूबा रहा और इन पाँच किसानों को नियंत्रण में न रख सका, ना ही इनसे अच्छी खेती करवा सका। अब यहाँ ध्यान दीजियेगा - वह अतिश्रेष्ठ दयालु व्यक्ति हैं - ``भगवान''। निर्धन व्यक्ति हैं - ``हम''। खेत है- ``हमारा शरीर''। पाँच किसान हैं हमारी इन्द्रियाँ - ``आँख, कान, नाक, जीभ और मन''। प्रभु ने हमें यह शरीर रूपी खेत अच्छी फसल(कर्म) करने को दिया है और हमें इन पाँच किसानों को अर्थात् इन्द्रियों को अपने नियंत्रण में रख कर कर्म करने चाहिये, जिससे जब वो दयालु प्रभु जब ये शरीर वापस मांग कर हिसाब करें तो हमें रोना न पड़े।

परानुभूति ही मानवता

एक पोस्टमैन ने एक घर के दरवाज़े पर दस्तक देते हुए कहा, ``चिट्ठी ले लीजिये''।

अंदर से एक बालिका की आवाज़ आई,``आ रही हूँ''। लेकिन तीन-चार मिनट तक कोई न आया तो पोस्टमैन ने फिर कहा, ``अरे भाई! मकान में कोई है क्या,अपनी चिट्ठी ले लो''। लड़की की फिर आवाज़ आई,``पोस्टमैन साहब,दरवाज़े के नीचे से चिट्ठी अंदर डाल दीजिए, मैं आ रही हूँ। ``पोस्टमैन ने कहा,``नहीं,मैं खड़ा हूँ,रजिस्टर्ड चिट्ठी है,पावती पर तुम्हारे साईन चाहिये''।

करीबन छह-सात मिनट बाद दरवाज़ा खुला। पोस्टमैन इस देरी के लिए झल्लाया हुआ तो था ही और उस पर चिल्लाने वाला था लेकिन, दरवाज़ा खुलते ही वह चौंक गया। एक अपाहिज कन्या जिसके पांव नहीं थे, सामने खड़ी थी।

पोस्टमैन चुपचाप पत्र देकर और उसके साईन लेकर चला गया। हफ़्ते,दो हफ़्ते में जब कभी उस लड़की के लिए डाक आती,पोस्टमैन एक आवाज़ देता और जब तक वह कन्या न आती तब तक खड़ा रहता। एक दिन लड़की ने पोस्टमैन को नंगे पाँव देखा।

दीपावली नज़दीक आ रही थी। उसने सोचा पोस्टमैन को क्या ईनाम दूँ।

एक दिन जब पोस्टमैन डाक देकर चला गया, तब उस लड़की ने जहाँ मिट्टी में पोस्टमैन के पाँव के निशान बने थे, उ पर काग़ज रख कर उन पाँवों का चित्र उतार लिया। अगले दिन उसने अपने यहाँ काम करने वाली बाई से उस नाप के जूते मंगवा लिये। दीपावली आई और उसके अगले दिन पोस्टमैन ने गली के सब लोगों से तो ईनाम माँगा और सोचा कि अब इस बिटिया से क्या ईनाम लेना? पर गली में आया हूँ तो उससे मिल ही लूँ। उसने दरवाज़ा खटखटाया।

अंदर से आवाज़ आई, ``कौन?'' पोस्टमैन, उत्तर मिला। बालिका हाथ में एक गिफ्ट पैक लेकर आई और कहा,``अंकल, मेरी तरफ से दीपावली पर आपको यह भेंट है। ``पोस्टमैन ने कहा'', तुम तो मेरे लिए बेटी के समान हो, तुमसे मैं गिफ्ट कैसे लूँ?'' कन्या ने आग्रह किया कि मेरी इस गिफ्ट के लिए मना नहीं करें।

``ठीक है कहते हुए पोस्टमैन ने पैकेट ले लिया। बालिका ने कहा, ``अंकल इस पैकेट को घर ले जाकर खोलना। घर जाकर जब उसने पैकेट खोला तो विस्मित रह गया, क्योंकि उसमें एक जोड़ी जूते थे। उसकी आँखें भर आई। अगले दिन वह ऑफिस पहुंचा और पोस्टमास्टर से फरियाद की कि उसका तबादला फौरन कर दिया जाए। पोस्टमास्टर ने कारण पूछा, तो पोस्टमैन ने वे जूते टेबल पर रखते हुए सारी कहानी सुनाई और भीगी आँखों और रुंधे कंठ से कहा, ``आज के बाद मैं उस गली में नहीं जा सकूंगा। उस अपाहिज बच्ची ने मेरे नंगे पाँवों को तो जूते दे दिये पर मैं उसे पाँव कैसे दे पाऊंगा?''

संवेदनशीलता का यह श्रेष्ठ दृष्टांत है। संवेदनशीलता यानि, दूसरों के दुःख-दर्द को समझना, अनुभव करना और उसके दुःख-दर्द में भागीदारी करना, उसमें शरीक होना। यह ऐसा मानवीय गुण है जिसके बिना इंसान अधूरा है।

एक अटल सत्य...!!!

भगवान विष्णु गरुड़ पर बैठ कर कैलाश पर्वत पर गए। द्वार पर गरुड़ को छोड़कर खुद शिव से मिलने अंदर चले गए। तब कैलाश की अपूर्व प्राकृतिक शोभा को देखकर गरुड़ मंत्रमुग्ध थे कि तभी उनकी नज़र एक खूबसूरत छोटी-सी चिड़िया पर पड़ी। चिड़िया कुछ इतनी सुंदर थी कि गरुड़ के सारे विचार उसकी तरफ आकर्षित होने लगे।

उसी समय कैलाश पर यम देव पधारे और अंदर जाने से पहले उन्होंने उस छोटे से पक्षी को आश्चर्य की दृष्टि से देखा। गरुड़ समझ गए कि उस चिड़िया का अंत निकट है और यमदेव कैलाश से निकलते ही उसे अपने साथ यमलोक ले जाएंगे।

गरुड़ को दया आ गई। वे इतनी छोटी और सुंदर चिड़िया को मरता हुआ नहीं देख सकते थे। उसे अपने पंजों में दबाया और कैलाश से हज़ारों कोस दूर एक जंगल में एक चट्टान के ऊपर छोड़ दिया, और खुद वापस कैलाश पर आ गये।

आखिर जब यम बाहर आए तो गरुड़ ने पूछ ही लिया कि उन्होंने उस चिड़िया को इतनी आश्चर्य भरी नज़र से क्यों देखा था। यमदेव बोले ``गरुड़, जब मैंने उस चिड़िया को देखा तो मुझे ज्ञात हुआ कि वो चिड़िया कुछ ही पल बाद यहाँ से हज़ारों कोस दूर एक नाग द्वारा खा ली जाएगी। मैं सोच रहा था कि इतनी जल्दी यह चिड़िया इतनी दूर कैसे जाएगी, पर अब जब वो यहाँ नहीं है तो निश्चित ही वो मर चुकी होगी।''

गरुड़ समझ गये ``मृत्यु टाले नहीं टलती चाहे कितनी भी चतुराई की जाए''।

इसके लिए भगवान कहते हैं।

करता तू वह है, जो तू चाहता है
परन्तु होता वह है, जो मैं चाहता हूँ
इसलिए कर तू वह, जो मैं चाहता हूँ
फिर देख होगा वो, जो तू चाहेगा।

जयपुर-वैशाली नगर। सेवाकेन्द्र के 18वें वार्षिकोत्सव पर केक काटते हुए सरकारी बिज़नेसमैन वेद प्रकाश, पूर्व अल्पसंख्यक आयोग अध्यक्ष जसवीर सिंह, बिज़नेसमैन कमल परासर, ब्र.कु. सुषमा, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. चन्द्रकला, ब्र.कु. लीला व कांग्रेसी नेता राजेश मिश्रा।

इन्दौर-कालानी नगर। भागवत कथा कार्यक्रम के दौरान पंडित तिवारी जी को ईश्वरीय निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. सुजाता।

हाथरस। मौलाना इरफान उल्लाह खान,नजामी शाही इमाम जामा मस्जिद,आगरा को ईश्वरीय सौगात में खुदा का खत भेंट करते हुए ब्र.कु. भावना।

रामनगर-जम्मू कश्मीर। प्रो. डॉ. कुलदीप सिंह व एडवोकेट दीपक सिंह बलोरिया को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका व ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. निर्मल।

नांगल डैम-पंजाब। 'शिव अवतरण संदेश' यात्रा द्वारा आध्यात्मिक ज्ञान देने के पश्चात् नायब तहसीलदार साधू सिंह को ईश्वरीय पत्रिकाएं भेंट करते हुए ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. रीमा व ब्र.कु. सरला।

गाज़ियाबाद-कवि नगर। ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में बायें से संतोष यादव,कमिश्नर,उत्तर प्रदेश भवन, उनकी धर्मपत्नी सरिता यादव, ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. राजेश बहन व ब्र.कु. वनीत।

प्रेम एक गहरी आस्था है...

कोई भी माँ अपने बच्चे को देखकर कितना आनंद अनुभव करती है, वह अतुलनीय है। मनुष्य के साथ यह प्रक्रिया थोड़ी अजीब है, प्रेम में वह सिर्फ दूसरे को ही नहीं रच रहा होता, अपने को भी रच रहा होता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो आप ही मिट्टी हैं और आप ही कुम्हार हैं। अब अपना घड़ा आपको स्वयं बनाना है। तभी आप अपनी प्यास भी स्वयं बुझा सकते हैं। आपको सिर्फ घड़े का निर्माण करना है, बारिश का नहीं, वह तो होनी ही है।

अगर कोई यह कहता है कि प्रेम एक-दूसरे के साथ सम्बंध का नाम है, तो वह गलत है। अपने वास्तविक रूप में यह एक दृष्टिकोण है जो आपको और दुनिया के सम्बंधों को अभिव्यक्त करता है। किसी दूसरे के साथ प्रेम सिर्फ अहम का विस्तार होता है, जिसमें आप मांगते हैं और निराश होते हैं। प्रेम कोई दी जाने वाली वस्तु नहीं है, इसलिए इसका अंत केवल हताशा और निराशा होता है।

प्रेम एक नहीं सब है

प्रेम कभी भी `एक' नहीं होता, हमेशा `सब' होता है। जब भी वह एक होने की कोशिश करता है तो कई भ्रामक तथ्यों को जन्म दे देता है। व्यक्ति जब तक अपने प्रेमी के माध्यम से पूरी मनुष्य जाति को और पूरी सृष्टि को प्रेम करने की क्षमता नहीं रखता तब तक जानिए कि उसका प्रेम अपूर्ण है। वह दूसरों के पास इसलिए जाता है कि खुद को भरा जा सके। आपको हमेशा यह याद रखना है कि दूसरे आपके पास तभी आते हैं जब आप उन्हें कुछ दे रहे होते हैं। उदाहरण के लिए एक कटोरी में दाने को देखकर चिड़ियाएं भी आपके पास चुगने आ जाती हैं। अगर देखा जाए तो सभी की कटोरियाँ बहुत पहले से ही भरी हुई हैं। प्रकृति ने सबको प्रेम अथाह दिया है, लेकिन न देख पाने की हमारी स्थिति ही हमें दूसरों से मांगने पर मजबूर करती है। आप पहले से ही भरपूर हैं।

प्रेम अपने वास्तविक रूप में एक दृष्टिकोण है जो आपको और दुनिया के सम्बंधों को अभिव्यक्त करता है। किसी दूसरे के साथ प्रेम सिर्फ अहम का विस्तार होता है, जिसमें आप मांगते हैं और निराश होते हैं। प्रेम कोई दी जाने वाली वस्तु नहीं है, इसलिए इसका अंत केवल हताशा और निराशा होता है।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

प्रेम की मांग है क्या आखिर ? जब तक तुम मेरे हो तब तक मैं तुम्हें प्रेम करता रहूंगा, तो क्या यह प्रेम हो सकता है, क्या किसी ने क्षण भर भी सोचा कि प्रेम मुक्ति है, न सिर्फ दूसरे से बल्कि स्वयं से भी। यह किसी के पीछे भागने का नाम नहीं है और ना किसी के सामने कुछ सिद्ध करने का। जब हम किसी को पूरे अपने अस्तित्व और प्राणों से प्रेम करते हैं तो सिर्फ हम करते हैं, वहां हम सम्पूर्ण रूप से विसर्जित हैं, समर्पित हैं। हमारा वहां कुछ नहीं बचता।

7 कदम राजयोग की ओर...

प्रश्न: मेरे मन में एक प्रश्न उठता है व आश्चर्य भी होता है कि आप लोग महाशिवरात्रि को शिव जयंती भी कहते हो। आप नये-नये नाम कहाँ से निकालते रहते हो। प्लीज़ वही नाम रखें जो परम्परागत चला आ रहा है।

उत्तर: नाम तो हर व्यक्ति के बदल जाते हैं। फिर शिव तो स्वयं भगवान हैं, उनके तो हज़ार नाम गाये जाते हैं। उनके नाम गुणवाचक व कर्त्तव्य वाचक हैं। वे कलियुग की महा काली रात में आते हैं इसलिए इस पर्व को महाशिवरात्रि भी कहते हैं, सचमुच तो यह इस धरा पर शिव का अवतरण अथवा दिव्य जन्म ही होता है। इसलिए इसे शिव जयंती भी कहते हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य नहीं बल्कि अपार हर्ष होना चाहिए कि जिससे आप जन्म-जन्म से मिलना चाहते थे, वह स्वयं आपसे मिलने के लिए आ चुका है, जिसे आप ढूंढ़ते थे, वह आपकी प्यास बुझाने आ चुका है, आज से 80 वर्ष पूर्व उसका दिव्य जन्म हो चुका है।

प्रश्न: आप लोग 80वीं शिव जयंती मना रहे हो। यह 80वीं शिव जयंती ही क्यों ? शिव तो अमर हैं, उनको अंकों में बांधना उचित नहीं है। फिर आपको शिव के जन्म लेने का पता कैसे चला ? उनके जन्म लेने का पता तो सबको चलना चाहिए।

उत्तर: सन् 1936 में निराकार, ज्ञान के सागर, परमपिता परमात्मा शिव परमधाम से इस धरा पर अवतरित हुए। क्योंकि वे अशरीरी, निराकार हैं व जन्म-मरण से न्यारे हैं, इसलिए उन्हें दूसरे के शरीर में अवतरित होना होता है। वह भी तन किसी और का नहीं, बल्कि स्वयं प्रजापिता ब्रह्मा का। जब वे अवतरित हुए तो उन्होंने इस सृष्टि की महानात्माओं का संकल्प से आह्वान किया कि हे वत्सों...मैं आ गया हूँ, तुम भी मेरे पास आ जाओ और वे आत्माएं जो सतयुग आदि में महान देवी-देवता थे, आकर्षित होकर उनके पास आ गये। उन्होंने अपने परमपिता को पहचाना। शिव परमात्मा ने उन्हें सत्य ज्ञान दिया। ब्रह्मा के मुख से ज्ञान की अजस्र धारा बहने लगी। तत्पश्चात उनके द्वारा यह संदेश अन्यात्माओं ने जाना और धरा पर अवतरित अपने परमप्रिय परमात्मा को पहचाना। यह आत्मा व परमात्मा के मिलन की शुभ वेला थी। शिव तो अमर हैं, सदा ही हैं, परन्तु इस धरा पर उनका आगमन कल्प में एक ही बार होता है। इसका संदेश हम सारे विश्व को दे रहे हैं और शीघ्र ही यह दिव्य संदेश सारी धरा पर प्रचारित होता जायेगा।

प्रश्न: शिवरात्रि पर लोग जागरण करते हैं, व्रत रखते हैं, शिव पर अक के फूल भी चढ़ाते हैं, क्या सचमुच प्रत्येक शिवरात्रि पर शिव अपने भक्तों से मिलने आते हैं।

उत्तर: हाँ यह सत्य है कि प्रत्येक शिवरात्रि पर शिव अपने भक्तों से व अपने बच्चों से मिलने आते हैं। वही भक्त उनके दर्शन पाते हैं जो सच्चे दिल

से उनकी आराधना करते हैं। इसलिए किसी-किसी सच्चे भक्त को ही उनके दर्शन होते हैं। परन्तु जो अज्ञान की नींद से जाग चुके, जो भक्त से उनके बच्चे बन गये, जिन्होंने उन्हें पहचान लिया व अपने जीवन को पवित्र बना लिया उनसे मिलने वे प्रत्येक शिवरात्रि पर जागते हैं। जिन्होंने पवित्रता का व्रत सदा के लिए ले लिया, वे तो उनके अति प्रिय वत्स हैं, उनसे तो वे प्रतिदिन अमृतवेले मिलते हैं।

यहां जागरण...अर्थात् अज्ञान से जागना। सदा जागरण अर्थात् सदा स्मृति स्वरूप रहना, व्रत लेना अर्थात् दृढ़ संकल्प करना व अक के फूल चढ़ाना अर्थात शिव परमपिता पर अपनी बुराइयों को अर्पित करना है।

प्रश्न: हमने सुना है कि शिव भांग पीते व धतूरा खाते थे। उन्हें कामारि भी कहा जाता है, उन्हें सदा ध्यान मग्न भी दिखाया जाता है। जब उन्होंने काम को भष्म कर दिया था तो उनके बच्चे कैसे पैदा हुए ? फिर शिव तो सबके पिता हैं, उनके दो पुत्र ही क्यों ? क्या हम शिव के पुत्र नहीं है ?

उत्तर: आपने बड़ा ही गुह्य प्रश्न पूछा है। वास्तव में भक्ति में कई भ्रम एक गलती के कारण पैदा हुए। वो है शिव व शंकर को एक मानना। शिव तो परम ज्योति हैं, परम सत्ता हैं, निराकार हैं, अजन्मा हैं व सभी आत्माओं के परमपिता हैं, जबकि शंकर एक आकारी देवता हैं उन्हें महादेव कहते हैं अर्थात् देवताओं में महान। जबकि शिव को शिव परमात्माय नमः करते हैं। तो शिव व शंकर के चरित्रों को मिला देने से गड़बड़ हो गई। शंकर ही तपस्वी स्वरूप में हैं, वे शिव के ध्यान में मग्न हैं, उन्होंने ही तप के बल से काम को भष्म किया, उन्होंने ही पर्वत पर एकान्त में बैठकर तपस्या की। जबकि शिव परमात्मा को तपस्या की ज़रूरत नहीं, वे तो सम्पूर्ण हैं, सदा मुक्त हैं व ब्रह्मलोक में रहते हैं। शंकर तपस्या के काल में निरंतर ईश्वरीय नशे से युक्त रहे, इसलिए लोगों ने उन्हें भांग के नशे में दर्शा दिया। क्या भांग खाने वाला तपस्वी या देवता हो सकता है ? भांग देवों का आहार नहीं है। हम सब आत्माएं शिव की संतान हैं, उनकी कोई दो संतान नहीं है।

प्रश्न: शंकर का बड़ा ही विलक्षण स्वरूप दिखाया है, देह पर सर्प, राख लपेटे हुए, मस्तक पर चन्द्रमा व सिर से बहती गंगा, हाथ में डमरू व साथ में त्रिशूल। कुछ अटपटा सा लगता है। क्या शंकर ऐसे हैं ?

उत्तरः वास्तव में शंकर का कोई अलग अस्तित्व नहीं है। वे यादगार हैं, वे प्रतीक मात्र हैं उन महान तपस्वियों के जिन्होंने ज्ञानेश्वर व योगेश्वर शिव के द्वारा सिखाये गये राजयोग की साधना की। उनकी देह पर विभिन्न वस्तुओं का दिखाया जाना आध्यात्मिक मर्म लिए हुए है। ध्यान दें - जिन्होंने विकारों रूपी विषधरों को अपने गले की माला बना लिया अर्थात् विकारों को वश कर लिया, जिनका चित्त चन्द्र की तरह शीतल हो गया, जिनकी बुद्धि से निरंतर ज्ञान की गंगा बहती रही अर्थात् जो ज्ञान स्वरूप हो गये, वे ही महान तपस्वी बने। इसलिए ग्यारह रूद्रों का गायन है, वे निरंतर अशरीरी बन गये, इसलिए उन्हें नग्न दिखाते हैं, वे ज्ञान डांस करने लगे, अतीन्द्रिय सुख में झूमने लगे, तीनों काल व तीनों लोकों के ज्ञाता बन गये, इसलिए उन्हें डमरू व त्रिशूल दिया है। तो, ये ब्रह्मा-वत्सों की बाप समान स्थिति का प्रतीक है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

Peace of Mind
For Cable & DTH
+91 8104777111
TATA Sky 192 airtel digital TV 686 VIDEOCON d2h 497 RELIANCE Digital TV 171
"C" Band, MPEG4 DVB-S2 Receiver-FRQ: 4054, POL: H, SYM: 13230, INSAT: 4A, DEG:83*E

बहुत ही सहज है राजयोग...

कभी-कभी आप कम्पयूटर पर काम करते हैं तो उस समय आप अन्दर से कोई फोल्डर या फाईल पर काम करते हैं ना कि अलग से टाईप करते हैं। ठीक उसी प्रकार हमारे संस्कारों में बहुत सारे पुराने फोल्डर्स वा फाईल्स (पुरानी आदतें, यादें, भूतकाल की बातें, दु:ख देने वाली बातें आदि-आदि) पड़े हुए हैं जो बीच-बीच में मन रूपी पर्दे पर आते रहते हैं। इसलिए आप कभी बहुत खुश होते हैं पुरानी बातें याद करके और कभी बहुत दु:खी होते हैं। जैसे कम्पयूटर में कोई फोल्डर को सर्च करने के लिए एक संकेत (क्ल्यू) का इस्तेमाल करते हैं। ठीक वैसे ही जब भी हम किसी भी व्यक्ति को देखते हैं जो बीस साल पहले मिला हो उसी समय उससे सम्बन्धित सभी पुरानी बातें याद आ जाती हैं।

दूसरा : पूर्व जन्मों के संस्कार - कई बार आप नवजात बच्चे को अलग-अलग हरकतें करते हुए देखते हैं। कई बार वो अपने आप हँसने लग जाता है या फिर रोने लग जाता है, तो मान्यता यह है कि बच्चे भगवान का रूप हैं और भगवान जी बीच-बीच में इन्हें हँसाते और रुलाते हैं। जबकि यह हमारे पूर्वजन्मों के संस्कार हैं जो बीच-बीच में जागृत हो जाते हैं। पैदा होने के बाद इस जन्म में आपने जो कुछ भी किया है, अगले जन्म में उसका प्रभाव बीच-बीच में दिखाई दे जाता है। इसका उदाहरण है कि कई माँ-बाप बहुत सीधे और सज्जन होते हैं लेकिन उनके बच्चों के संस्कार बहुत अलग होते हैं। यदि चार बच्चे हैं तो चारों के अलग-अलग संस्कार हैं।

तीसरा : वातावरण के संस्कार - आज हमारा वातावरण पूर्णतया दूषित हो चुका है। जो भी बाहर कुछ नया दिखाई देता है उसका प्रभाव बच्चों पर तुरन्त पड़ता है। माता-पिता की शिकायत भी होती है कि पहले हमारा बच्चा ऐसा नहीं था। अभी वातावरण के कारण बिगड़ गया है। वातावरण का मतलब यह है कि उसके दोस्तों का संग, सहकर्मियों का संग, पड़ोसियों का संग, साथ में इन्टरनेट, फेसबुक, वॉट्सऐप के कारण आज बच्चों का मानसिक सन्तुलन बिगड़ गया है। आज वो सब कुछ देखते हैं और वैसा ही व्यवहार करते हैं।

चौथा संस्कार: ज़बरदस्ती बदले हुए संस्कार (विलपॉवर) - इस संस्कार को थोड़ा ध्यान

से समझने की ज़रूरत है। कुछ लोग कहते हैं कि विलपॉवर तो अच्छी चीज़ है, लेकिन विलपॉवर नकारात्मक रूप से भी तो काम करती है। जिस प्रकार आज तक हम बहुत सारी बातें कहते आए लेकिन उसका गलत प्रभाव हमारे ऊपर पड़ता है, इसको हमने नहीं समझा। जैसे झूठ बोले बिना काम नहीं चलता, गुस्सा किए बिना काम नहीं चलता, आजकल थोड़ा चालाक होना ज़रूरी है, एकदम आँख मूंद कर किसी पर विश्वास मत कर लो, बेटा वहाँ जा रहा है तो मार खाकर मत आना, मार के आना। इसके अलावा कुछ मान्यतायें भी हैं जैसे सुबह-सुबह खाली बाल्टी देखना, कहते हैं आज काम नहीं होगा, बिल्ली रास्ता काट जाये तो कहते हैं आज काम नहीं होगा। अब आप बताओ कि बिल्ली को पता है कि आप अभी निकलने वाले हैं और मुझे रास्ता काटना है। कितनी अजीब बात हैं ना! ये सारे संस्कार हमने ज़बरदस्ती बदले हैं और आज वो ना चाहते हुए भी हो जाता है क्योंकि वो संस्कार में है। क्या आप चौबीस घंटे गुस्सा कर सकते हैं? शायद नहीं! हाँ चौबीस घंटे आप शांत ज़रूर रह सकते हैं।

इसके अलावा कई बच्चे बार-बार अपने लिए कहते , मैं तो डम्प हूँ, डलहेड हूँ या पागल हूँ या मूर्ख हूँ आदि-आदि शब्द इस्तेमाल करते हैं। यह संस्कार उनका पक्का होता जाता है और एक दिन उनको सभी उसी नज़र से देखने लग जाते हैं। आप सबसे हमारा ये विन्रम अनुरोध है कि आप अपने बारे में अच्छी-अच्छी बातें बोलें, जिससे आपको भी सुख मिले और दूसरों को भी।

झालावाड़-राज.। कांग्रेस अध्यक्ष सचिन पायलट एवं कांग्रेस उपाध्यक्ष प्रमोद जैन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मीना।

दिल्ली-ओम विहार(उत्तर नगर)। हाई टेक कार मास्टर्स,टाटा मोटर्स में मानसून कैम्प का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. विमला। साथ हैं टाटा मोटर्स के जी.एम. बलप्रीत सिंह व अन्य।

बरवाला-हरियाणा। 'रोड सेफ्टी मिशन' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में एस.डी.एम. अटकन जी को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. इंदिरा।

मेरठ। शांति पब्लिक स्कूल में '7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. श्वेता, ब्र.कु. मोना, शिक्षकगण व छात्र-छात्राएं।

अबोहर-पंजाब। नये वर्ष के आगमन पर आयोजित कार्यक्रम में केक काटते हुए ब्र.कु. पुष्पलता, ब्र.कु. सुनीता, शकुंतला सोनी, डॉ. कंचन खुराना, श्याम सुंदर सचदेवा, बलराम सिंगला, डॉ. राजिन्द्र मित्तल व डॉ. आकाश खुराना।

रायागडा-ओडिशा। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के उद्घाटन अवसर पर सम्बोधित करते हुए सुभाष चन्द्र बिसवाल,डिप्युटी डायरेक्टर,एग्रीकल्चरल डिपार्टमेंट। साथ हैं ब्र.कु. श्रीमती, अबनति साहू,सी.डी.पी.ओ., अंतर्यामी नायक,डायरेक्टर,रूरल सेल्फ एम्प्लॉयमेंट ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट व ब्र.कु. अश्विनी।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-16

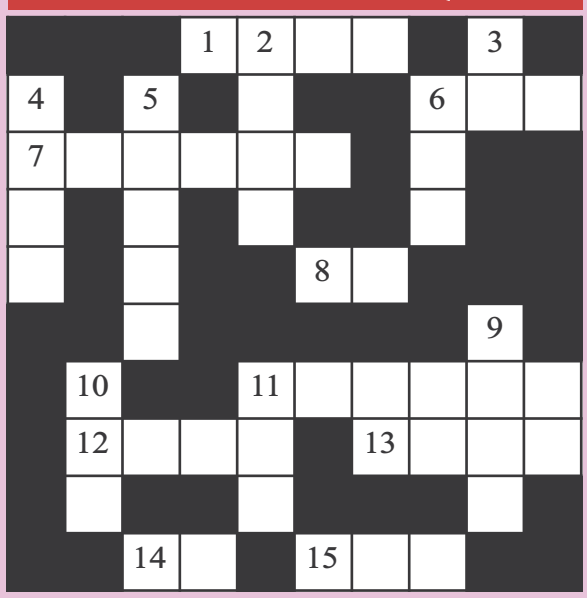

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

शिव को याद करो और उनके नामों व गुणों से पहेली को हल करो

ऊपर से नीचे

2. शिव राम के भी ईश्वर....हैं।
3. शिव का एक नाम....भी है।
4. शिव ज्ञान का सोमरस पिलाने वाला....है।
5. शिव को कभी काल नहीं खाता, इसलिए....भी कहते हैं।
6. शिव....हैं, कभी जन्म नहीं लेते।
9. शिव सारे विश्व के नाथ....हैं।
10. शिव ब्रह्मा-विष्णु-शंकर के रचयिता होने के कारण....शिव कहलाते हैं।
11. शिव पत्थरबुद्धि आत्माओं को पारसबुद्धि बनाने वाले....नाथ हैं।

बायें से दायें

1. शिव का कोई शारीरिक आकार नहीं है, इसलिए उन्हें....कहते हैं।
6. शिव....नाथ हैं क्योंकि जन्म-मरण रहित हैं।
7. शिव कालों के काल....हैं।
8. ....का अर्थ है कल्याणकारी।
11. शिव हमारे पापों को काटने वाला....है।
12. शिव मुक्ति देने वाला....है।
13. शिव, हम आत्माओं की बीमारी दूर करने वाला....है।
14. शिव को....भी कहते हैं।
15. बाबा कांटों को फूल बनाने वाला....नाथ है।

- ब्र.कु.पायल,बोरीवली लोखंडवाला

खुशनुमा जीवन का पैगाम आपके नाम

कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए दादी रतनमोहिनी के साथ संतोष यादव, ओमप्रकाश यादव, ब्र.कु. रतन, ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. मनोरमा, ब्र.कु. सुरेश व अन्य।

नारनौल। परमात्मा द्वारा दी गई शिक्षा से जीवन को खुशनुमा बनाना बहुत सहज है। परमात्मा हमें आध्यात्मिक शक्तियों से सम्पन्न बनाकर श्रेष्ठ कर्म करना सिखाता है। उक्त उद्गार पुलिस लाईन ग्राउण्ड में `खुशनुमा जीवन का पैगाम-आपके नाम' विषय पर आयोजित विशाल कार्यक्रम में संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में मानव अपने जीवन में तनाव और परेशानियों से बहुत दुःखी व निराश है। ऐसे समय में खुद को आत्मा समझकर परमात्मा को याद करें तो स्वयं में दिव्य शक्ति भरेगी जिससे जीवन में खुशहाली की नई राह मिल सकती है। इसलिए स्वयं को और परमपिता परमात्मा को पहचानना ज़रूरी है।

इस कार्यक्रम में विशेष आकर्षण के केन्द्र थे 359 नन्हें `श्रीकृष्ण'। हरियाणा सरकार द्वारा आयोजित `गीता जयंती महोत्सव' के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के प्रयासों से नारनौल में पहली बार इतनी बड़ी संख्या में श्रीकृष्ण के ड्रेस में बच्चे एकत्रित हुए। नारनौल और आसपास के कस्बों और गांवों से श्रीकृष्ण की ड्रेस में एकत्रित हुए 359 बच्चे मानों सभा में उपस्थित लगभग 6000 लोगों को जीवन का आनंद लेने के लिए प्रेरित कर रहे थे। मुम्बई से आये जीवन प्रबंधन ट्रेनर स्वामीनाथन ने सभी को जीवन में खुश रहने के लिए तन और मन दोनों को

- **आत्मा समझकर परमात्मा को याद करें तो भर जायेगी विशेषता – दादी रतनमोहिनी**
- **नारनौल में दिखा कृष्ण की बाललीला का एक अद्भुत दृश्य**
- **359 बच्चे नन्हें श्रीकृष्ण की ड्रेस में पहली बार एक स्थान पर एक साथ, अहमदनगर से आये ब्र.कु. दीपक हरके ने इसे लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज कराने की बात कही**
- **जीवन में स्वस्थ रहने के लिए तन और मन दोनों को सशक्त बनाने की मिली टिप्स**
- **परमात्मा हमें इतना सम्पन्न बना देगा, किसी चीज़ की नहीं रहेगी कमी – ब्र.कु. मनोरमा**
- **महान व पवित्र बनाने का कार्य सिर्फ ब्रह्माकुमारियाँ ही कर सकती हैं – संतोष यादव**

स्वस्थ और सशक्त बनाने की टिप्स दिये। इलाहाबाद से आयीं ब्र.कु. मनोरमा ने जीवन में खुशहाली के लिए दूसरों को देखने के बजाय स्वयं को देखने की सीख देते हुए कहा कि स्वयं को सुखी रखने के लिए अपने अंदर छिपी हुई शक्तियों को जागृत करें तो

श्रीकृष्ण की पोशाक में 359 बच्चों के साथ ब्र.कु. दीपक हरके व ब्र.कु. बहन।

वह परमात्मा हमें इतना सम्पन्न बना देगा कि किसी चीज़ की कमी नहीं रहेगी। उन्होंने सभी को राजयोग के अभ्यास द्वारा शांति की अनुभूति कराई।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए हरियाणा विधानसभा की डिप्युटी स्पीकर संतोष यादव ने कहा कि जीवन को खुशनुमा बनाने की कला सिखाने का कार्य तो यह महान और पवित्र आत्मायें ही कर सकती हैं। मैं मानती हूँ कि अपने विचारों को शुद्ध बनाकर ही हम खुश रह सकते हैं, तनाव से मुक्त हो सकते हैं।

विधायक ओमप्रकाश यादव ने दादी रतनमोहिनी जी का धन्यवाद करते हुए अनुरोध किया कि हर वर्ष नारनौल आकर हमें आशीर्वाद देते रहें। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा समाज उत्थान में योगदान की सराहना करते हुए कहा कि ये बड़ी लगन से और निःस्वार्थ भावना के साथ लोगों को आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करते हैं। विशेषतः महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में तो इनका योगदान काबिले तारीफ है।

फरीदाबाद से आयीं ब्र.कु. उषा ने सभी का स्वागत किया तथा ब्र.कु. रतन दीदी ने मेहमानों को ईश्वरीय सौगात तथा प्रसाद देकर सम्मानित किया। माउण्ट आबू से आये ब्र.कु. सुरेश शर्मा ने बड़े ही सुंदर ढंग से मंच संचालन किया।

नैतिक मूल्यों के आधार से करें व्यापार

कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु. शिवानी व ब्र.कु. पुष्पा का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए सतपाल गिरधर।

दिल्ली-पाण्डव भवन। व्यवसाय का उद्देश्य है खुशी अनुभव करना। परन्तु हम उस खुशी को तब अनुभव कर सकेंगे जब हमारा मन शांत और स्थिर होगा और हम नैतिक मूल्यों के आधार पर व्यापार करेंगे। उक्त उद्गार दिल्ली स्कूटर्स ट्रेडर्स एसोसिएशन करोल बाग के व्यापारियों के लिए आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में ब्र.कु. शिवानी ने व्यक्त किये।

करोल बाग सेवाकेन्द्र की मुख्य संचालिका ब्र.कु. पुष्पा ने सभी को सुखमय जीवन व्यतीत करने की कला बताई।

दिल्ली स्कूटर्स ट्रेडर्स एसोसिएशन के प्रेज़ीडेंट रवि अजय हंस, वाईस प्रेज़ीडेंट सुरिन्दर कुमार वलेचा व आशा वलेचा, जनरल सेक्रेट्री दीपक सचदेवा, एडवाइज़री बोर्ड मेम्बर लोकेश नारंग, मुल्तान बिरादरी के प्रेज़ीडेंट अशोक गेरा तथा वाईस प्रेज़ीडेंट सतपाल गिरधर ने ब्र.कु. शिवानी तथा ब्र.कु. पुष्पा का स्वागत करते हुए शॉल पहनाकर सम्मानित किया। तत्पश्चात् एसोसिएशन के प्रमुख सदस्यों को ब्र.कु. शिवानी ने शॉल पहनाया तथा ब्र.कु. पुष्पा ने ईश्वरीय सौगात भेंट की।

हेल्थ-वेल्थ-हैप्पीनेस फेस्टीवल का आयोजन

दिल्ली-रजौरी गार्डन। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के रजौरी गार्डन सेवाकेन्द्र के सौजन्य से एक 5 दिवसीय आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया। इस मेले का उद्घाटन ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, दिल्ली ज़ोन की इंचार्ज राजयोगिनी दादी रुक्मणि व 360 गाँवों की खाप के अध्यक्ष चौधरी राम करन जी ने रिबन काटकर व दीप प्रज्वलित कर किया। तत्पश्चात् दादी हृदयमोहिनी ने पूरे मेले के हर स्टॉल पर जाकर अवलोकन किया तथा मेले के प्रति अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की।

उन्होंने मेले की सफलता हेतु शुभकामना संदेश में कहा कि यह मेला हज़ारों आत्माओं को हेल्थ-वेल्थ और हैप्पीनेस देकर उनका कल्याण करेगा। चौधरी राम करन जी ने कहा कि मेरा सौभाग्य है जो मैं दादी जी के साथ उद्घाटन सत्र में शामिल हुआ।

इस मेले का कई विशिष्ट अतिथियों जैसे सुरेन्द्र सिंह सोलंकी मटियाले वाले, विधायक विजेन्द्र गर्ग, साथ ही कई एन.जी.ओ. के संस्थापकगणों ने

मेले का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए दादी हृदयमोहिनी। साथ हैं दादी रुक्मणि, ब्र.कु. शक्ति, ब्र.कु. सुदेश,जर्मनी, ब्र.कु. जवाहर व अन्य भाई बहनें।

- **रजौरी गार्डन सेवाकेन्द्र ने किया पाँच दिवसीय मेले का आयोजन**
- **लगभग 35 हज़ार लोगों ने मेले का किया अवलोकन। दोपहर 3 बजे से रात्रि 10 बजे तक चलता था मेला**
- **मेले का मुख्य आकर्षण चैतन्य नवदुर्गा झाँकी और उसके बाद होने वाला गरबा नृत्य था**
- **मेले का उद्घाटन दादी हृदयमोहिनी, दादी रुक्मणि व चौधरी राम करण जी ने किया**
- **मेले में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के सभी स्टॉल्स अत्यंत आकर्षणमय थे**
- **प्रमुख प्रदर्शनी स्टॉल में हेल्थ-वेल्थ हैप्पीनेस स्टॉल था जो दर्शकों का प्रमुख आकर्षण केन्द्र था**
- **दिल्ली के कई गणमान्य अतिथियों एवं मंत्रियों ने किया मेले का अवलोकन**

भी सपरिवार इस मेले का लाभ लिया। इन संस्थाओं के अतिरिक्त दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों से लगभग 500 से भी अधिक छात्र-छात्राओं, शिक्षकों प्रधानाचार्यों ने इस मेले का अवलोकन किया व इसकी जानकारी ली।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088,
Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 5th Sep 2015
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।